अवध भारती–2022–23
षष्टम अंक

अवध भारती

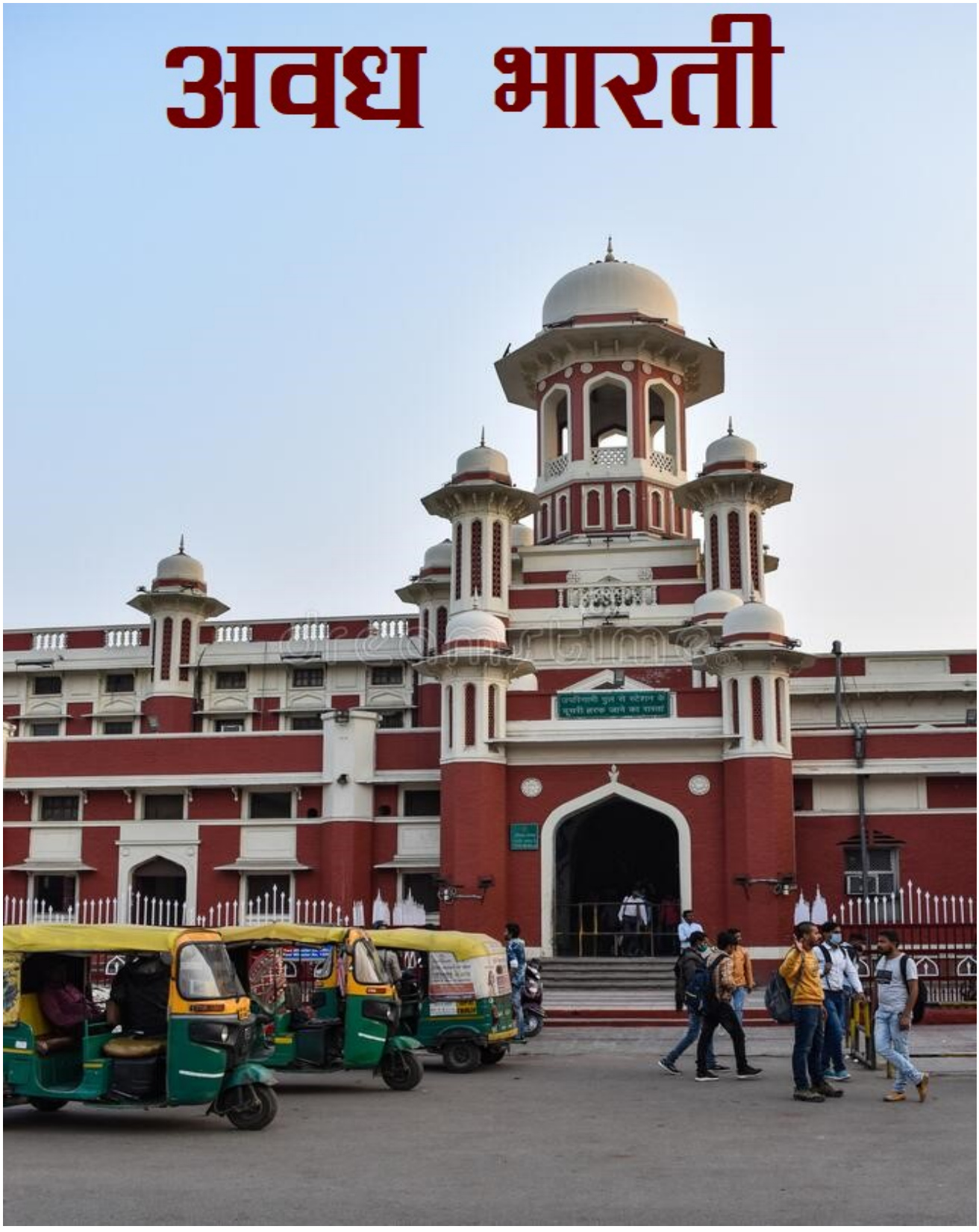

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ
बी–1, एन.ई. ब्लाक, द्वितीय तल, पिकप भवन,
विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ – 226010

हडको प्रोफाइल

हमारे देश में, आवासीय तथा इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास के क्षेत्र में हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (हडको), सार्वजनिक क्षेत्र का एक प्रमुख तकनीकी–वित्तीय उपक्रम है। रुपये 2,500 करोड़ की अधिकृत पूंजी के साथ, आज की तारीख में हडको के पास रुपये 2,001.90 करोड़ की प्रदत्त इक्विटी है। कॉर्पोरेशन का मुख्यालय राष्ट्रीय राजधानी, नई दिल्ली में स्थित है और देशभर में इसके विभिन्न क्षेत्रीय तथा विकास कार्यालयों का विशाल नेटवर्क है जिसमें सशक्त एवं बहु–आयामी कार्मिक कार्यरत हैं। जनमानस की आजीविका में बदलाव के लिए सुदृढ़ पर्यावास विकास को बढ़ावा देते हुए, अग्रणी तकनीकी–वित्तीय केंद्र बनने के अपने कॉर्पोरेट विज़न के साथ, हडको जीवन स्तर की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए सतत पर्यावास विकास की प्रोन्नति के लक्ष्य की ओर अग्रसर है। हडको को 2002 में अनुसूची–ए पीएसई में अपग्रेड किया गया था और 2004 में मिनी–रत्न का दर्जा भी दिया गया था। सभी आवास वित्त संबंधी ऋणों को सामाजिक आवास, आवासीय अचल संपत्ति, स्वास्थ्य केंद्र, खेल के मैदान, पुलिस स्टेशन, न्यायालय, जेल, श्मशान–घाट और खुदरा वित्त इत्यादि में वर्गीकृत किया गया है । रिटेल वित्त पोषण को भी हडको निवास (सामूहिक रूप से, "आवासीय वित्त पोषण") के नाम से जाना जाता है ।

शहरी इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त पोषण में निम्नलिखित संबंधित परियोजनाओं के लिए ऋण स्वीकृत किए जाते हैं:

जलापूर्ति
सड़कें और परिवहन
ऊर्जा
उभरते क्षेत्र, जिसमें एसईजेड (विशेष आर्थिक क्षेत्र), औद्योगिक इन्फ्रास्ट्रक्चर, गैस पाइपलाइन, तेल टर्मिनल और दूरसंचार क्षेत्र की परियोजनाएं शामिल हैं
वाणिज्यिक इन्फ्रास्ट्रक्चर तथा अन्य, जिनमें शॉपिंग सेंटर, मार्केट कॉम्प्लेक्स, मॉल–कम–मल्टीप्लेक्स, होटल और कार्यालय भवन शामिल हैं
सामाजिक इन्फ्रास्ट्रक्चर और क्षेत्र विकास तथा
सीवरेज, ड्रेनेज और कठोर अपशिष्ट प्रबंधन (समेकित रूप से, "शहरी इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त पोषण")।
स्मार्ट सिटी

शहरी इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त पोषण के प्रमुख उधारकर्ता राज्य सरकारें और उनकी एजेंसियां होती हैं। हडको ने मार्च 2013 से ही निजी क्षेत्र की संस्थाओं को नए शहरी इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त पोषण ऋण मंजूर करना बंद कर दिया है ।

लक्ष्य

जनमानस के आजीविका बदलाव के लिये सुदृढ़ पर्यावास विकास को बढ़ावा देते हुए अग्रणी तकनीकी–वित्तीय संगठनो में स्थान बनाना।

उद्देश्य

जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए सुदृढ़ पर्यावास विकास को बढ़ावा देना।

संरक्षक
एवं मुख्य संपादक : श्री एच.टी. सुरेश, कार्यकारी निदेशक,
हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

संपादक : श्री रत्न प्रकाश, संयुक्त महाप्रबन्धक (वित्त)

सह संपादक : श्री अयाज़ उद्दीन, वरिष्ठ प्रबन्धक (परि.) एवं
हिन्दी नोडल अधिकारी

विशिष्ट मार्ग दर्शन : श्री आर. के. श्रीवास्तव, संयुक्त महाप्रबन्धक (परि.)

विशिष्ट सहयोग : श्री सुनील कुमार, वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)

परिकल्पना एवं साज–सज्जा : श्री सुनील कुमार वर्मा, प्रबन्धक (आई.टी.)

सहयोग : श्री रवि रंजन चौधरी प्रबन्धक (वित्त),
श्री कान्ती बल्लभ, उप प्रबन्धक एवं
समस्त कार्यालय के कर्मयोगी।

आवरण पृष्ठ लखनऊ के चारबाग रेलवे स्टेान का है।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ, बी–1, एन.ई. ब्लाक, द्वितीय तल, पिकप भवन,
विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ –226010 दूरभाष 0522–2720834

******

अनुक्रमणिका

रचनाकारों के नाम	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
संदेश श्री एम. नागराज, निदेशक (कारपोरेट प्लानिंग)	03	भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात श्री रवि रंजन चौधरी, प्रबन्धक (वित्त)	24
संदेश श्री डी. गुहान, निदेशक (वित्त)	04	आजादी के 75 वर्ष अमृत महोत्सव श्री दीपक कुमार राय, प्रबन्धक (विधि)	25-26
संदेश श्री आलोक कुमार जोशी, कार्यकारी निदेशक (रा. भा.)	05	भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता श्रीमती आरती शर्मा, वरिष्ठ प्रबन्धक (सचि.)	27
संदेश श्री सुरेन्द्र कुमार, महाप्रबन्धक (रा. भा.)	06	अहंकार श्री अयाज़ उद्दीन, वरिष्ठ प्रबन्धक एवं हिन्दी नोडल अधिकारी	28
प्रधान संपादकीय श्री एच. टी. सुरेश, कार्यकारी निदेशक, हडको क्षेत्रीय कार्याय, लखनऊ	07	बड़बोलेपन की पराकाष्ठा डॉ दीपक कुमार राय, प्रबन्धक (विधि)	29
संपादक श्री रत्न प्रकाश, संयुक्त महाप्रबन्धक (वित्त)	08	हिन्दी हमारा धर्म है श्रीमती माया कुमारी पत्नी श्री सुनील कुमार, वरि. प्रबन्धक (वित्त)	30
सह संपादक श्री अयाज़ उद्दीन, वरिष्ठ प्रबन्धक (परि.) एवं हिन्दी नोडल अधिकारी	09	हिन्दी श्री सुनील कुमार, वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)	31
चुटकुले यशस्वी बधानी पुत्र श्री दिनेश चन्द्र बधानी, एएफ (एसजी)	09	कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर)	32
खुशी की तलाश श्री एच. टी. सुरेश, कार्यकारी निदेशक, हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ	10-11	वृक्षारोपण अभियान	33
हिन्दी रा.भा. का इतिहास और सार्थकता श्री रत्न प्रकाश, संयुक्त महाप्रबन्धक (वित्त)	12-13	सतर्कता जागरूकता सप्ताह	34
पर्यावरण श्री आर. के. श्रीवास्तव, संयुक्त महाप्रबन्धक (परि.)	14-15	हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ की उपलब्धियां	35–36
गंगा एक्सप्रेसवे श्री संजय कुमार, उप महाप्रबन्धक (परि.)	16-17	राजभाषा संबन्धित गतिविधियां	37–38
सतर्कता से भ्रष्टाचार पर नियन्त्रण श्री दीपक कुमार राय, प्रबन्धक (विधि)	18	अवध भारती के पंचम अंक का विमोचन	39
भारत के विकास में महिलाओं की भूमिका श्री राजीव शर्मा, उप महाप्रबन्धक (आई.टी.)	19	8वां अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस श्री सुनील कुमार वर्मा, प्रबन्धक (आई.टी.)	39
हडको की स्वर्ण जयन्ती–स्मृति एवं योगदान श्री सुनील कुमार, वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)	20-21	हडको क्षेत्रीय कार्यालय में 52वां स्थापना दिवस	40
सतर्क भारत–समृद्ध भारत श्री दिनेश चन्द्र बधानी, एएफ (एसजी)	22-23	प्रथम एवं अन्तिम कवर पृष्ठ	

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ अपनी हिन्दी गृह पत्रिका अवध भारती के षष्टम् अंक का प्रकाशन कर रहा है। किसी भी संस्था की गृह पत्रिका दर्पण के समान होती है जिसमें कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा एवं कार्यालय की गतिविधियां प्रतिबिम्बित होती है। हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ का अवध भारती के पंचम अंक के लिए नराकास से प्रथम पुरस्कार प्राप्त करना गौरव का विषय है। पत्रिका के आगामी अंक के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को मेरी हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं सहित,

एम नागराज
निदेशक (कारपोरेट प्लानिंग)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ द्वारा हिन्दी में वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। गृह पत्रिकाओं के प्रकाशन से एक ओर जहां कर्मचारियों की मौलिक लेखन प्रतिभा का विकास होता है वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन तथा प्रचार–प्रसार की पृष्ठभूमि को भी एक महत्वपूर्ण आधार प्राप्त होता है। इसी दिशा में अवध भारती के पांचवे अंक को नराकास, लखनऊ से प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ द्वारा हिन्दी कार्यान्वयन तथा प्रचार प्रसार के लिए किये जा रहे प्रयास अत्यन्त सराहनीय है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

डी गुहन
निदेशक (वित्त)

संदेश

यह हर्ष एवं गौरव की बात है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ, राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में बढावा देने के लिए हिन्दी गृह पत्रिका अवध भारती के छठे अंक का प्रकाशन कर रहा है। हिन्दी गृह पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विविध कार्यक्रमों में प्रतिभागिता होती है तथा राजभाषा का प्रसार–प्रचार होता है। अवध भारती पत्रिका के पांचवें अंक को नराकास, लखनऊ, द्वारा प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किए जाने के उपलक्ष्य में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ और पत्रिका के इस अंक की सफलता की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ ।

डॉ. आलोक कुमार जोशी
कार्यकारी निदेशक (रा.भा.)

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ हिन्दी गृह पत्रिका अवध भारती का छठा अंक प्रकाशित कर रहा है। हिन्दी गृह पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों एवं राजभाषा का प्रसार–प्रचार होता है। अवध भारती पत्रिका का नराकास से प्रथम पुरस्कार प्राप्त करना सराहनीय प्रयास है। मै अवध भारती पत्रिका के छठे अंक के प्रकाशन एवं भविष्य में इसकी लोकप्रियता के लिए कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

सुरेन्द्र कुमार
महाप्रबंधक (रा.भा)

: प्रधान सम्पादक की कलम से :

मित्रों जब से मुझे क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ का दायित्व मिला है उसके बाद अवध भारती का यह दूसरा प्रकाशन है। इसके पहले लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय चार अंको का प्रकाशन कर चुका था। लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अपने कार्य के प्रति जितना लगाव है उतना ही हिन्दी राजभाषा के प्रति रूझान भी प्रशंसनीय है। इसी प्रयास के परिणित उत्कृष्ट हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन हो पा रहा है। इसके लिए हडको क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मयोगी बधाई के पात्र है। हिन्दी पत्रिका प्रकाशन से न सिर्फ राजभाषा का प्रचार प्रसार होता है बल्कि कार्यालय के कर्मयोगियों के अन्दर छुपी साहित्यिक प्रतिभा प्रस्फुटित होती है। इसके साथ ही साथ यह पत्रिका परिवार के अन्य सदस्यों को लिखने और अपने विचार प्रकट करने का एक साहित्यिक मंच उपलब्ध कराती है। आप सभी ऊर्जावान अधिकारियों/कर्मचारियों ने स्वयं और अपने परिवार के सदस्यों का अमूल्य योगदान देकर पत्रिका की सुन्दरता का निखारा है। आप सभी धन्यवाद और बधाई के पात्र है।

अपने सभी सहकर्मियों के अतुलनीय प्रयास को सम्मानित पाठको के अवलोकनार्थ अवध भारती हिन्दी पत्रिका का छठा अंक सौंपते हुए अपार हर्ष हो रहा है। आशा है कि आप सभी जिज्ञासु पाठकों को यह पत्रिका पूर्व की भॉति पसन्द आयेगी। इसे तैयार करने में लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मनिष्ठ सहयोगियों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है जिसे आप सभी पाठको के आर्शीवाद और शुभकामनाओं की अपेक्षा है।

साथियों, आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि अवध भारती पत्रिका के पॉचवे अंक को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) लखनऊ से प्रथम पुरूस्कार प्राप्त हुआ है। जिसके लिए लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय की पूरी टीम बधाई की पात्र है। लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय हिन्दी राजभाषा की दृष्टि से ''क'' क्षेत्र में आता है। इसलिए इस कार्यालय की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है हमें न सिर्फ हिन्दी की उत्कृष्ट पत्रिका का प्रकाशन करना है बल्कि हिन्दी में अधिकाधिक पत्राचार हो, पत्रावलियों में हिन्दी में टिप्पण लिखे जायें। मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मयोगी साथी अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार अधिक से अधिक हिन्दी में अपने कार्यो का निष्पादन कर भी रहे है। मेरी मातृभाषा हिन्दी न होने के बावजूद भी मेरा हिन्दी के प्रति बहुत रूझान है। इसलिए हर सम्भव मैं भी हिन्दी में कार्य करना पसन्द करता हूॅ।

साथियों, इस पत्रिका में हडको कार्यालय के सभी कर्मयोगियों ने और उनके परिवार के सदस्यों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया है। पत्रिका के प्रकाशन में जिन सभी रचनाकारों ने अपनी रचनाएं दी है, या अन्य किसी प्रकार सहयोग दिया है। वह सब बधाई के पात्र है। इसलिए मैं अपने सभी सहयोगियों का और उनके परिवार के सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूॅ।

ई–पत्रिका होने के कारण सभी क्षेत्रीय कार्यालयों से और मुख्यालय के सभी गुणी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि इस ई–पत्रिका को जरूर खोलें और रूचि और समय के अनुसार अध्ययन करें। तत्पश्चात् प्रकाशित लेखों और कविताओं पर अपनी बेबाक टिप्पणी से हमें अवश्य अवगत करायें। आपके सुझावों एवं मार्गदर्शन का स्वागत रहेगा।

बहुत–बहुत आभार एवं धन्यवाद।

एच.टी. सुरेश
कार्यकारी निदेशक
हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ

: सम्पादक की कलम से :

अपने सम्मानित पाठको के हाथों में अवध भारती हिन्दी पत्रिका का छठा अंक सौंपते हुए अपार हर्ष हो रहा है। आशा है कि आप सभी जिज्ञासु पाठकों को यह पत्रिका पूर्व की भाँति पसन्द आयेगी। इसे तैयार करने में लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मनिष्ठ सहयोगियों ने अपना योगदान दिया है।

साथियों, राजभाषा की दृष्टि से लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय ''क'' क्षेत्र में आता है। इसलिए इस कार्यालय की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है कि हिन्दी में अधिकाधिक पत्राचार हो, पत्रावलियों में हिन्दी में टिप्पण लिखे जायें। मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मयोगी साथी अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार अधिक से अधिक हिन्दी में अपने कार्यो का निष्पादन कर भी रहे है। मेरा भी हिन्दी के प्रति बहुत रूझान है इसलिए हर सम्भव मैं भी हिन्दी में कार्य करना पसन्द करता हूँ। जिसका परिणाम यह है कि हम हिन्दी राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को छूने के निकट हैं।

सभी क्षेत्रीय कार्यालयों और मुख्यालय के पाठको को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि वित्तीय वर्ष 2021–2022 में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लखनऊ के द्वारा हमारी अवध भारती पत्रिका का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है जो हम सबके परिश्रम का प्रमाण है।

साथियों, इस पत्रिका में हडको कार्यालय के सभी कर्मयोगियों ने और उनके परिवार के सदस्यों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया है। सभी लोगों ने अपनी–अपनी रूचि के अनुसार लेख और कविताएँ प्रकाशन के लिए दी है और पात्रिका प्रकाशन में सभी का अपेक्षित सहयोग मिला है। इसलिए मैं अपने सभी सहयोगियों का और उनके परिवार के सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ।

ई–पत्रिका होने के कारण सभी क्षेत्रीय कार्यालयों से और मुख्यालय के सभी गुणी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि इस ई–पत्रिका को जरूर खोलें और रूचि और समय के अनुसार अध्ययन करें। तत्पश्चात् प्रकाशित लेखों और कविताओं पर अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत करायें। आपके सुझावों एवं मार्गदर्शन का स्वागत रहेगा।

बहुत–बहुत आभार एवं धन्यवाद।

रत्न प्रकाश
संयुक्त महाप्रबन्धक (वित्त)

: सह–सम्पादक की कलम से :

कार्यालय में कार्य में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग हो, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुख्यालय द्वारा प्रत्येक क्षेत्रीय कार्यालय में एक हिन्दी नोडल अधिकारी और एक हिन्दी नोडल सहायक के नाते कार्य सौपा जाता है। लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में जब यह गुरूत्तर दायित्व मुझे सौपा गया तो मन में विचार आया कि लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में सभी कर्मयोगियों द्वारा अपनी क्षमता के अनुसार हिन्दी में अधिकाधिक कार्य सम्पादन तो किया ही जाता है। लेकिन यदि अपने सहकर्मियों में छुपी हुई साहित्यिक गतिविधियों को निखारने के लिए एक घरेलू पत्रिका का प्रकाशन किया जाय तो हडको कर्मयोगियों में राजभाषा के प्रति जागरूकता बढ़ेगी, और लिखने की अभिरूचि जाग्रत होगी।

मुझे आपसे यह साझा करते हुए हर्ष हो रहा है कि हमारे पाँचवें अंक को नगर राजभाषा समिति लखनऊ द्वारा उत्कृष्ट पत्रिका की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार मिला है। जिसके लिए हमारे सभी सहयोगियों को बहुत–बहुत बधाई और साधुवाद। मित्रों आप सबकी रूचि और हिन्दी के प्रति गहन लगाव ने हमें पुनः पत्रिका प्रकाशन पर बल दिया है। पुनः अवध भारती पत्रिका आपके हाथों में सौपते हुए मुझे गर्व महसूस हो रहा है। आशा है पूर्व वर्षो की भाँति इस पत्रिका को पसन्द करेंगे।

यह ई–पत्रिका आपके आप सभी जागरूक पाठको को समर्पित करते हुए आपके विचार आमंत्रित करता हूँ। आप अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवश्य अवगत करायें। पत्रिका प्रकाशन में यह कोई त्रुटि पाठको संज्ञान में आती है तो उसे भी जरूर अवगत करायें ताकि भविष्य में आने वाले अंक में सुधार किया जा सके। इस ई–पात्रिका में भाग लेने वाले सभी रचनाकारों और इसमें सहयोग देने वाले उनके परिवार के सदस्यों को बहुत बहुत आभार।

अयाज् उद्दीन
वरिष्ठ प्रबन्धक (परि.) एवं
हिन्दी नोडल अधिकारी

चुटकुले

टीचर – इतने दिन कहां थे, स्कूल क्यों नहीं आए? गोलू – बर्ड फ्लू हो गया था मैम। टीचर – पर ये तो पक्षियों को होता है इंसानों को नहीं। गोलू – इंसान समझा ही कहां आपने...रोज तो मुर्गा बना देती हो..!!	टीटी ने चिंटू को प्लेटफॉर्म पर पकड़ लिया, टीटी – टिकट दिखा, चिंटू – अरे मैं ट्रेन में आया ही नहीं, टीटी – क्या सबूत है? चिंटू – अरे सबूत यही है कि मेरे पास टिकट नहीं है।

यशस्वी बधानी
पुत्र श्री दिनेश चन्द्र बधानी
एएफ (एसजी)

खुशी की तलाश

विषय हालीवुड की फिल्म के नाम पर है जिसे मै बहुत पसंद करता हूँ। विल स्मिथ ने क्रिस गार्डनर के रूप में एक सफल व्यवसायी रैग्स टू रिच कहानी के रूप में एक अदभुत प्रदर्शन किया है। वह फिल्म में मुख्य मार्ग क्या है, बड़े सपने देखने के बारे में है और एक स्पष्ट विचार और कहने की इच्छा है.....रवैया।

मैं पाठकों को उस दिशा में जाने के लिए प्रेरित नहीं कर रहा हूं सिवाय एक बार देखने के लिए प्रेरित करने के। मै हैप्पीनेस फैक्टर के बारे में अधिक सोच रहा था और सोच रहा था कि यह किसी के जीवन में कितना महत्तवपूर्ण है। सुख और दुख साथ–साथ चलते हैं या सिक्के के दो पहलू होते हैं, दुख वाले हिस्से को पार करने की ज़रूरत है। मुझे खुशी के शहर कोलकोता में रहने के दौरान अपना समय याद है जो कुछ भी हो या जो कुछ भी हो रहा, उस शहर में जीवन के हर क्षेत्र में खुशी की एक दृश्यता है। उज्जवल भाग और बड़ी तस्वीरें देखें और हमेशा मुस्कराते हुए आगे बढें।

देशों के लिए हैप्पीनेस इन्डेक्स हैं और 156 देशों में से फिनलैंड वर्ष 2021 में पहले स्थान पर है। हम भारतीय 136वें स्थान पर हैं। ऐसे कई कारक हैं जिनका उपयोग स्थायी सुखी जीवन पाने के लिए किया जाता है। जनसंख्या और पर्यावरण जैसे बाहरी कारक हैं जो हमें नीचा दिखाते हैं। हाल के सर्वेक्षण से संकेत मिलता है कि दिल्ली रहने योग्यता सूचकांक में बहुत नीचे है और आगे यह मुख्य रूप से वायु प्रदूषण के कारण है। दिल्ली सरकार प्रदूषण के स्तर को कम करने के लिए अपने तरीके से करना चाहती थी, लेकिन अनुपस्थिति में स्कूलों में हैप्पीनेस रैंकिग में सुधार हुआ और देखें वे कैसे सुधार करते हैं। इसी तरह मुझे एक विचार आया कि हम इस संबन्ध में एक प्रतिपूर्ति कैसे कर रहे हैं। मेरे लिए इस विषय पर ध्यान देना एक चुनौती है। लेकित हडको का आरएचआरडी लेने के बाद, मुझे लगा कि इस दिशा में विचार करना शुरू करने के लिए समय है। खुश कर्मचारी कंपनी में सहयोग करेगा। सरकार की नौकरी में वह नही मिलता जो कम्पनी की नौकरी में मिलता है। यह वही है जो काई कंपनी को बदले में राष्ट्र को वापस देता है क्योंकि वे एक सीपीएसई हैं। खुशी के देश के सूचकांक में पिछड़ने की तरह, हम अपने संगठन में भी पिछड़ सकते हैं। लेकिन हिम्मत न हारे, इसे बेहतर बनाने का प्रयास करें। हर क्षेत्र में उतार चढाव होंगे और इतने ही टिवीस्ट होंगे।

चूंकि हमारी कंपनी मानव संसाधनों के इर्द गिर्द घूम रही है इसलिए प्रतिस्पर्धा पर काबू पाने और साथ ही साथ संसाधनों के दोहन से कंपनी के विकास को अत्यधिक महत्व देने की आवश्यकता हैं किसी के कैरियर के विकास में और प्रत्येक चरण में विभिन्न महत्वपूर्ण कारक और महत्वपूर्ण मोड़ होते हैं। कंपनी को हाथ पकड़ने की जरूरत है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण मोड़ होते हैं। कंपनी को हाथ पकड़ने की जरूरत है। सबसे पहले और महत्वपूर्ण वह कारक जो नए पदधारी को आगे देखता है वह है एक प्रवाहनीय और सुरक्षित कार्य वातावरण। वित्तीय पैकेज जो न केवल व्यक्ति और पीछे परिवार की स्थिरता की ओ जाता है। कर्मचारी को अच्छे हास्य और जुड़ाव में रखने के लिए कैरियर की वृद्धि और समय पर हस्तक्षेप मानव संसाधन का एक बड़ा हिस्सा है। एक्सपोज़र और लर्निंग में फर्क पड़ता है। सीपीएसई एक अखिल भारतीय इकाई होने के नाते विभिन्न क्षेत्रों में काम करना व्यक्ति और कंमपी दोनों के लिए बहुत मायने रखता है। हैप्पीनेस इंडेक्स का आकलन करने के लिए सूची को हमेंशा विकसित और फ्रीज किया जा सकता है।

मेरे लिए नौकरी की अवधि के हर पहलू के दौरान दिन के अंत में एक व्यक्ति में खुशी मायने रखती है। यह भी विकसित करने की आवश्यकता पर एक दृष्टिकोण है। सबसे महत्वपूर्ण सकरात्मक दृष्टिकोण यह है कि कोई व्यकित दिन प्रतिदिन की खुशी को कैसे देखता है। एक व्यक्ति द्वारा निर्धारित छोटे लक्ष्य और उसे पूरा करने के लिए पीछा करना महत्वपूर्ण है। मेरा सुझाव है कि एक डायरी रखें और लिखें कि कोई क्या करना चाहता है यह अधिकारिक व्यक्तिगत सामाजिक आदि हो सकता है और इन कार्यों की सिद्धि को देंखें और इससे खुशी प्राप्त करें। यहां मैं जो कहता हूँ वह प्रति कार्य लक्ष्य नहीं है बल्कि व्यक्ति जो भी लक्ष्य निर्धारित करता है और वह इसे प्राप्त करता है यह मायने रखता है। उदाहरण के लिए मान लें कि कोई कहता है कि वह अनुशासन के लिए एक उदाहरण के रूप में स्थापित करना चाहता है और समय का पाबंद होना चाहता है। आपको बस इतना करना है कि आप तब तक पीछा करें जब तक आप हासिल नहीं कर लेते।

लक्ष्य व्यक्तिगत हो सकते हैं या पेशे से जुड़े हो सकते हैं और यह बड़े पैमाने पर कंपनी और समाज को अच्छी तरह से जोड़ता है। मै सामाजिक लक्ष्य का अपना उदाहरण देता हूं मैं एक नियमित रक्त दाता था और हाल ही में स्पष्ट रूप से कैरियर और उम्र बढने के कारण मेरे नियमित रक्तदान के रास्ते में समस्याएं आ रही थीं मैने तय किया कि मै नियमित व्यायाम करूंगाा जो सभी स्वास्थ्य कारक नियंत्रण करते हैं और एक दिन चलते हैं और रक्तदान करते हैं। यह बहुत बड़ी खोज थी और जब मै 60 साल तक पंहुचने के लिए 8 महीने छोटा था तो ऐसा हुआ मैं देश प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थान एम्स में चला गया और रक्दान करने में सक्षम था और यह ध्यान देने योग्य था कि मैं अपने से परे ऐसा करना जारी रख सकता हूँ और सेवानिवृत्ति उपरांत 65 वर्ष तक अगर मै खुद को फिट रख सकता हूं वह भी एक खुशी का कारक है। किसी के चेहरे में खुशी और 60 वर्ष से अधिक ऐसे अवसर की प्रतीक्षा कर रहा हैं। इसी तरह यदि कोई टीम अच्छा प्रदर्शन करती है और अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करती है चाहे कितना भी बड़ा या छोटा कार्य हो, हर कोई पार्टी के लिए बुला रहा है जिसका अर्थ है सभी खुश चेहरे। हम सभी को अपनी नौकरी का आनन्द लेने, मुस्कुराते रहने, अपने दिमाग को काबू करने और सर्वोत्तम प्रयास करने की आवश्यकता है और मुझे यकीन है कि सर्वोत्तम परिणाम स्पष्ट है नौकरी से संतुष्टि एकतरफा दृष्टिकोण नही है इसके लिए टीम के दृष्टिकोण, रणनीति, नेतृत्व, प्रेरणा आदि की आवश्यकता है। हडको आरओ और एचओ के मामले में मानव संसाधनों को एक साथ रखा जाता है जब प्रयासों का विलय हो जाता है तो उज्जवल परिणाम संभव होता है और पुरस्कार प्रशंसा का पालन करने की आवश्यकता होती है.....

दिन के अंत में प्रत्येक व्यक्ति का उज्जवल चेहरा, खुशी, स्वस्थ जीवन, परिवार, कंपनी और राष्ट्र के लिए आकांक्षा लाता है। खुशी संयोग से नही मिलती है इसलिए खुश रहें, स्वस्थ रहें, मुस्कराते रहें और खुशी का प्रयास जारी रखते हुए जीवन के सभी क्षणों का सम्मान करें।

एच.टी. सुरेश
कार्यकारी निदेशक
हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ

हिन्दी राजभाषा का इतिहास और सार्थकता

मुगल काल में फारसी और अंग्रेजों के समय राजभाषा अंग्रेजी थी, जिसका इस देश की संस्कृति एवं जन सामान्य की भाषा से कोई सम्बन्ध नही था। इसीलिए मुगल बादशाह सदैव एक हिन्दी एवं फारसी नसीस (अनुवादक) रखते थे। इसी तरह अंगेजी शासन काल में भी हमें सर्वत्र अंग्रेजों को हिन्दी पढ़ना, टूटी–फूटी हिन्दी बोलना और हिन्दी विद्वानों की सहायता से सरकारी कामकाज चलाने के उदाहरण मिलते है, इन सबका कारण था आम जनता एवं तत्कालीन शासन के बीच संवाद का आसानी से आदान प्रदान होना। हिन्दी इस कमी को भली–प्रकार पूरी करती थी। आज भी अंग्रेजी जानकारों की संख्या हमारे देश में बहुत ही कम है, क्योकि भारत गॉवों का देश है। यहॉ बहुतायत जनता गाँवों में निवास करती है। इसलिए प्रशासन को भली प्रकार चलाने के लिये तकनीकी शब्दों का अभाव एवं परिभाषित शब्दावली की अनुपलब्धता बताकर कुछ लोग हिन्दी को सक्षम भाषा नहीं मानते। परन्तु ऐसा नही है हर क्षेत्र के लिए हिन्दी भाषा में तकनीकी एवं परिभाषिक शब्द मौजूद है, परन्तु लोग अज्ञानवश ऐसा बोलते है। न जाने कितने देशज शब्दों को हिन्दी भाषा ने अपने में समाहित कर लिया है लगता ही नही है कि ये हिन्दी भाषा के शब्द नही है जैसे–डाक्टर, इंजीनियर, रेलवे स्टेशन, चाकू एवं तकिया आदि। ये सभी अग्रेजी एवं फारसी भाषा के शब्द हिन्दी में ऐसे घुल–मिल गये है जैसे हिन्दी भाषा के शब्द ही हो। सबसे समृद्ध भाषा वह होती है जिसके अन्दर दूसरी भाषा को हजम कर लेने की क्षमता हो। इस दृष्टि से भी हम कह सकते है कि हिन्दी विश्व की सबसे सम्पन्न भाषाओं में से एक है और इसी हजम कर लेने की क्षमता की वजह से हिन्दी भाषा का शब्द भंडाकरण कोष भी बढ़ता जा रहा है।

राजभाषा संविधान की दृष्टि में:–

संवैधानिक दृष्टि से 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा घोषित करने के पीछे भी इसी बात को ध्यान में रखा गया था कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसे 80 प्रतिशत तक लोग समझ सकते है और राज्यों को जोड़ने में सेतु का काम कर सकती है। हिन्दी राजभाषा विभाग ने कठिन शब्दो की शब्दावली भी तैयार कर दी है, फिर भी यदि हिन्दी के शब्दों के चयन में परेशानी आती है तो अग्रेजी या अन्य किसी भाषा के शब्दों को जैसा कि आप सोचते है यथावत लिख दें (अनुच्छेद–351 के तहत) वह शब्द हिन्दी का ही माना जायेगा और भाषा के प्रवाह में कोई अन्तर नही आयेगा। भारतीय गणतंत्र में संविधान राजभाषा अधिनियम 1963 भाग 17 में कुल नौ अनुच्छेदों के अंतर्गत राजभाषा संबन्धी प्रावधान किये गये जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

अनुच्छेद 343 – देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी भारतीय संघ की राजभाषा होगी। इसके साथ ''भारतीय अंको के मानक अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप'' (1, 2, 3, 4 आदि) का प्रयोग किया जायेगा। संविधान लागू होने के बाद आरंम्भिक 15 वर्षो तक अंग्रेजी ही देश की राजभाषा के रूप में प्रयोग की जाती रहेगी।

अनुच्छेद 344 – संविधान लागू होने के 5 वर्षो बाद पुनः 5 वर्षो बाद राष्ट्रपति एक राजभाषा आयोग गठित करेंगें जो कि राजभाषा के मामलों में अपनी सिफारिशें राष्ट्रपति को प्रस्तुत करेगा।

अनुच्छेद 345 – प्रत्येक राज्य अपने सरकारी कामकाज के लिए हिन्दी, अंग्रेजी अथवा किसी भी अन्य स्थानीय भाषा को अपनी राजभाषा अंगीकार कर सकता है। उल्लेखनीय है कि इसमें अनुच्छेद 343 में वर्णित 15 वर्ष की अवधि वाला सिद्धांत लागू नही होगा।

अनुच्छेद 346 – संघ और राज्य तथा राज्यों के बीच पारस्परिक आदान प्रदान के लिए हिन्दी अथवा अग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जा सकता है।

अनुच्छेद 347 – किसी राज्य के जनसमुदाय के द्वारा मॉग किये जाने पर उनकी भाषा को मान्यता देने के लिए राष्ट्रपति किसी राज्य को निर्देश दे सकते है।

अनुच्छेद 348 – सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालय की कार्यवाही निर्धारित 15 वर्षो की अवधि समाप्त होने तक अंग्रजी में रहेगी तथा अधिनियमों, नियमों एवं विधेयकों आदि के लिए भी अंग्रेजी का ही प्रयोग किया जाता रहेगा।

अनुच्छेद 349 – पन्द्रह वर्षो की अवधि के पूर्व अनुच्छेद–348 में वर्णित प्रयोजनों में से किसी के लिये प्रयोग की जाने वाली भाषा का उपबंध करने से सम्बन्धित विधेयक राष्ट्रपति की पूर्वानुमति के बिना संसद में प्रस्तुत नहीं किया जा सकेगा।

अनुच्छेद 350 – संघ या राज्य के किसी अधिकारी, प्राधिकारी को संघ या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भी भाषा में अभिवेदन (प्रार्थना–पत्र) आदि दिए जा सकेगें।

अनुच्छेद 351 – हिन्दी भाषा के विकास हेतु मूलतः संस्कृत से गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुये शब्द भंडार को सम्पन्न करना संघ का कर्तव्य होगा।

27 मई 1952 के राष्ट्रपति ने उच्चतम व उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति आदेश अंग्रेजी व हिन्दी में जारी करने की अधिसूचना के साथ 1955 में इसी प्रयोजन हेतु विभिन्न कार्यालयों में अंग्रेजी के साथ हिन्दी में प्रयोग को प्राधिकृत किया गया।

1955 में बाल गंगााधर की अध्यक्षता में प्रथम राजभाषा आयोग का गठन किया गया जिसने 14 वर्ष की आयु तक हिन्दी को पढ़ाने की अनिवार्यता करने सहित विज्ञान व अनुसंधान कार्य को छोड़कर सभी जगह हिन्दी माध्यम में शिक्षा देने की सिफारिश की और नौकरियों में भर्ती के लिये हिन्दी के प्रश्न पत्र को अनिवार्य रूप से रखने की भी सलाह दी।

सन् 1957 में श्री पन्त की अध्यक्षता में राजभाषा संसदीय समिति गठित की गयी जिसकी रिपोर्ट 1959 आयी। इस रिपोर्ट को लागू करने के लिये राष्ट्रपति ने 1960 में एक आदेश जारी किया। संविधान में निर्धारित 15 वर्ष की अवधि समाप्ति होने के पूर्व 1963 में राजभाषा अधिनियम बनाया गया जिसके अनुसार हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी का भी प्रयोग आगे जारी रहेगा। इस बीच एक संसदीय समिति द्वारा हिन्दी की प्रगति का पुनरीक्षण किया जायेगा। जिसके आधार पर राष्ट्रपति निर्देश देंगे।

16 दिसम्बर 1967 को राजभाषा अधिनियम 1963 में संशोधन करके द्विभाषा फार्मूला अपनाया गया जिसका अर्थ था कि हिन्दी और अंग्रेजी के साथ–साथ हर राज्य अपने–अपने क्षेत्र की क्षेत्रीय भाषा को अपनाएं।

1968 में संसदीय संकल्प के द्वारा हिन्दी के विकास के लिये एक सघन कार्यक्रम तैयार करने का निर्णय लिया गया। जिसके तहत 1976 में राजभाषा नियम बनाया गया और हिन्दी के विकास के लिये देश को तीन भागों में बॉटकर अलग–अलग लक्ष्य निर्धारित किये गये जिन्हें हम ''क'', ''ख'' और ''ग'' क्षेत्र कहते है। इसी आधार पर वार्षिक कार्यक्रम बनाकर सभी सरकारी/उपक्रमों में राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है।

रत्न प्रकाश
संयुक्त महाप्रबन्धक (वित्त)

पर्यावरण

पर्यावरण संरक्षण समय की माँग है। पर्यावरण संरक्षण का गुण हमें विरासत में मिला है। यह सत्य है कि मानव बड़ा ही दुष्ट है। लेकिन फिर भी मानव, मानव के काम आता है। जहाँ मानव एक तरफ विकास करता है तो उसके साथ साथ विनाश के बीज भी बोता जाता है। विकास के नाम पर पेड़ काटे जाते है। पहाड़ तोड़े जा रहे है। पर्यावरण के बिना हम धरती पर जीवन की परिकल्पना नहीं कर सकते हैं। संसार के प्रत्येक प्राणी के जीवन से पर्यावरण निकाल दिया जाय तो उसका जीवन सम्भव नही है। धरती पर कोई ऐसा प्राणी नहीं है जिसे जल की आवश्यकता न हो। जल जीवन के लिए नितांत आवश्यक है। जल हमें समुद्र, नदियों, तालाबों, झीलों, वर्षा एवं भूजल के माध्यम से प्राप्त होता हैं। हमें इनका दोहन नही करना चाहिए। जितनी आवश्यकता हो उतना ही लेना चाहिए। त्यागपूर्वक प्रयोग करना चाहिए। इसी सम्बन्ध में ईशावास्योपनिषद का पहल मंत्र है–ईशावास्यइदम् यत् जगत्याम जगत् तेनतेक्त्वा भुंजिथा मा गृधाकश्यश्वेद धनम्। गधो की तरह वस्तुओं का संग्रह या भक्षण न करें, त्यागपूर्वक जितनी जरूरत हो उतना ही लें। जल एक प्राकृतिक संसाधन है एवं हमारे देश में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है बस इसके संरक्षण एवं उचित इस्तेमाल की आवश्यकता है, जल को हम प्रदूषित न करें। हमारी पृथ्वी का 70 प्रतिशत भाग जल से ढका हुआ है, परन्तु यह जल पीने योग्य नहीं है, क्योंकि इस जल का लगभग 97 प्रतिशत हिस्सा महासागरों में खारे पानी के रूप में है। पीने योग्य मीठा जल धरती पर उपलब्ध जल का केवल एक प्रतिशत ही है, तथा शेष भाग समुद्र में खारे पानी तथा ध्रुवों पर बर्फ के रूप में जमा है। हमारे पास जल स्रोत के रूप में नदियाँ, तालाब, झरने, कुएं, बावड़िया आदि है, जिनके उचित इस्तेमाल, संरक्षण एवं प्रदूषण से बचाने की जरूरत है। बढ़ती जनससंख्या, औद्योगिकीकरण तथा शहरीकरण के कारण जलस्रोतों एवं भूजल का अत्यधिक दोहन हो रहा है, जिसके कारण इन जल स्रोत्रों पर दबाव बढ़ा है अतः हमें जल की महत्ता को समझना होगा तथा इसका उपयोग प्रकृति की एक अमूल्य धरोहर समझकर सावधानी से करना होगा।

आज हमारे देश के कुछ राज्यों जैसे महारास्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों तथा बुंदेलखण्ड प्रांत में जल संकट अत्यंत खतरनाक स्थिति में पहुँच गया है। यहाँ पानी के लिए लोग मीलों तक भटक रहे हैं एवं रोज मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। सौभाग्यवश मानसून की अच्छी वर्षा होने से इस संकट से लोगों को मुक्ति मिली। भूगर्भ विशेषज्ञों का मानना है कि यह जल संकट भूजल के अंधाधुंध दोहन का परिणाम है। यह भविष्य के एक बहुत बड़े खतरे का संकेत है, क्योंकि पानी के अत्यधिक दोहन से जमीन के अंदर उत्प्लावन बल कम होने लगता है, जिससे जमीन धंसने लगती है तथा उसमें दरारें पड़ने लगती है, भूजल के उत्पलावन बल को बनाए रखने के लिए पानी को समुचित मात्रा में जमीन में रिचार्ज करते रहना होगा, यह तभी सम्भव है जब ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में भूजल के दोहन को नियंत्रित किया जाए, वर्षा जल का संचयन हो, ताकि पानी जमीन के अंदर प्रवेश कर सके। इससे पर्यावरण की रक्षा हो सकेगी।

पर्यावरण संरक्षण का अर्थ केवल जल को रिचार्ज करने से नही है। इसका अर्थ पानी की बर्बादी उसके दुरूपयोग एवं प्रदूषण को रोकने से भी है। जल का संरक्षण एक अनिवार्य आवश्यकता है क्योंकि वर्षाजल हर समय उपलब्ध नहीं रहता है अतः पानी की कमी को पूरा करने के लिए इसके संरक्षण एवं उचित प्रबंधन की आवश्यकता है। इस वर्ष मानसून की अच्छी वर्षा हुई है, यदि इस वर्षा जल को ही संचित कर लें तो, पूरे वर्ष हमें जल उपलब्ध होगा और हम जल अभाव से बच सकते हैं। पर्यावरण संरक्षण आज के समय की आवश्यकता है। प्लास्टिक कचरा भी पर्यावरण के लिए बड़ी समस्या बन गया है। प्लास्टिक ऐसी चीज है जो मिट्टी में 100 सालों तक गलती नही है। इसलिए जमीन की उर्वराशक्ति भी क्षीण होती है। प्रायः देखा गया है कि लोग अपने घरों का कचरा प्लास्टिक की थैली में भरकर सड़क पर फेंक देते है। हमने यहाँ तक देखा है कि लोग अपने घरों का बचा हुआ खाना प्लास्टिक की थैली में भरकर सड़क पर फेंक देते है। सड़क पर घूमने वाले जानवर खाने के लालच में प्लास्टिक भी खा जाते है।

हम अखबारों में पढ़ते है गायों के पेट से प्लास्टिक निकलती है, जो कि उनके जान पर बन आती है। माननीय न्यायालय ने भी प्लास्टिक पर प्रतिबन्ध लगाने का आदेश जारी किया है लेकिन अभी इस दिशा में ठोस शुरूआत नही हुई है। इसके लिए सरकार के साथ साथ हम भी जिम्मेदार हैं। जब घर से सामान खरीदने के लिए निकलते है तो खाली हाथ हिलाते हुए चले जाते है। उधर से जितने आइटम क्रय करते है उतने प्लास्टिक के थैले बाजार से ले आते है, जो प्रातः सब कूड़े के ढेर में पहुँच जाते है। यहाँ तक की 10 रूपये की हरी धनिया भी लेते है, तो प्लास्टिक का कैरी बैग ले आते है। हमें इस स्थिति से बचना चाहिए। हम सुधरेगें तो जग सुधरेगा। हमें स्वयं से पहल करनी होगी। सब कुछ सरकार के भरोसे नही छोड़ना चाहिए।

इसी तरह गाड़ियों से निकलने वाला धुँआ, पर्यावरण को प्रदूषित करता है। अपनी गाड़ियों का समय पर सर्विसिंग कराते रहना चाहिए, इस बात की सदैव चिन्ता करनी चाहिए कि कम से कम हमारी गाड़ी से प्रदूषण न निकलें। हम प्रदूषण के लिए जिम्मेदार न हों। कारखानों से निकलने वाला धुँआ पर्यावरण को दूषित करता है। इसके नियत्रण के लिए सरकार के पास प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड है। विभाग द्वारा यह प्रयास किया जाता है कि फैक्टरी, कारखानों में धुँआ नियन्त्रण में रहे।

हर नागरिक की वैक्तिगत जिम्मेदारी भी है कि अपने स्तर पर प्रदूषण रोकने का प्रयास करें। पर्यावरण संकट से निपटने में यह एक सकारात्मक पहल करनी होगी और सरकार के साथ साथ जनजागरण अभियान चलाकर पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि जन सहभागिता से ही पर्यावरण की रक्षा की जा सकती है

आर. के. श्रीवास्तव
संयुक्त महाप्रबन्धक (परि.)

छोटी–छोटी खुशियों को पूरे मन से और जोश से मनाएं।
इससे जीवन में उत्साह बना रहता है।

शान्ति को बाहर खोजना व्यर्थ है, क्योंकि वह तो आपके गलें में पहना हुआ हार है।

परिश्रम, शरीर को स्वस्थ, मस्तिष्क को साफ, हृदय को उदार रखता है।

खूबसूरत लोग हमेशा अच्छे नही होते, अच्छे लोग हमेशा खूबसूरत होते हैं।

गंगा एक्सप्रेसवे परियोजना

गंगा के अत्यंत आकर्षक एवं मनोहारी परिवेश में उत्तर प्रदेश सरकार ने नियंत्रित गंगा एक्सप्रेसवे सड़क नेटवर्क के विकास और निर्माण के लिए एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम शुरू किया है। गंगा एक्सप्रेसवे परियोजना यूपी के पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों की कनेक्टिविटी के साथ पूरे राज्य को राजधानी लखनऊ एक राष्ट्रीय राजधानी और आसपास के राज्य को हाई स्पीड कॉरिडोर के साथ जोड़ती है। एक्सेस कंट्रोल्ड एक्सप्रेसवे की कल्पना उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा एक महत्वपूर्ण निर्बाध हाई–स्पीड रोड लिंक के रूप में की गई है। यूपी एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (UPEIDA) राज्य सरकार के योगदान और हुडको से ऋण लेकर कर भूमि अधिग्रहण की परियोजना को लागू कर रहा है।

गंगा एक्सप्रेसवे के लिए भूमि अधिग्रहण का प्रस्ताव गांव काशी (डासना मेरठ एक्सप्रेसवे पर) मेरठ से शुरू होकर गांव जुदापुर डंडोत, प्रयागराज के पास समाप्त होता है, जिसकी कुल लंबाई 594 किलोमीटर है। हडको ऋण सहायता द्वारा इस योजना में रुपये 2400 करोड़ निर्गत किया है। जिसका कुल परियोजना लागत रूपये 8028.67 करोड़ है। योजना को लगभग 12 विभिन्न पैकेजों में विभाजित किया गया है। एजेंसी (UPEIDA) ने लगभग 7304.68 हेक्टेयर क्षेत्र के लिए भूमि अधिग्रहण/खरीदने का प्रस्ताव दिया था जिसमें 95 प्रतिशत भूमि अधिग्रहण का कार्य हो चुका है। प्रस्तावित एक्सप्रेसवे संरेखण/स्पैन महत्वपूर्ण स्थानों को पार करते हु, 12 जिले मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, अमरोहा, संभल, बदायूं, शाहजहांपुर, हरदोई, उन्नाव, रायबरेली, प्रतापगढ़ और प्रयागराज को स्पर्श करता हैं। यह परियोजना पूर्वी और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बीच सीधा संपर्क प्रदान करती है। एक्सप्रेसवे उत्तर प्रदेश राज्य में सामाजिक–आर्थिक विकास के साथ–साथ व्यापार, पर्यटन और उद्योग को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

परियोजना में प्रस्तावित राजस्व सृजन सिविल कार्यो/सड़कों के निर्माण के बाद टोल शुल्क के संग्रह के माध्यम से है एवं लंबी अवधि में यह योजना आत्मनिर्भर है। सरकार के आदेश के अनुसार भूमि के काश्तकारों/किसानों से सीधे बातचीत के आधार पर भूमि का अधिग्रहण किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश का दिनांक 17–07–2019 की अधिसूचना के अनुसार अनुमानित टोल राजस्व से आय रख रखाव और परियोजना के भविष्य के विस्तार की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त हो सकता है।

गंगा नदी जो हमारी पहचान है) हमारी प्राचीन सभ्यता की प्रतीक है जो केवल नदी ही नहीं, एक संस्कृति है जिसमें पूरे वर्ष जल रहता है । इस सदानीरा नदी का जल करोड़ों लोगों की प्यास बुझाता है । करोड़ों पशु–पक्षी इसके जल पर निर्भर हैं । लाखों एकड़ जमीन इस जल से सिंचित होती है। गंगा नदी पर फरक्का आदि कई बाँध बनाकर बहुउद्देशीय परियोजना लागू की गई है । गंगा नदी का भारतीयों के बीच बहुत महत्व है। गैर–हिंदू और हिंदू दोनों इस राजसी नदी के मूल्य को महसूस करते हैं जो देश के प्रतीक के रूप में कार्य करता है। गंगा अपना रूप बदलती रहती है । आरंभ में यह सिकुड़ी सी होती है पर मैदानी भागों में इसका तट चौड़ा हो जाता है। चौड़े तटों के इस पार से उस पार जाने के लिए नौकाएँ एवं स्टीमर चलती हैं । गंगा नदी पर अनेक स्थानों पर लंबे पुल भी बनाए गए हैं। जिसके फलस्वरूप परिवहन सरल हो गया है ।

एजेंसी (UPEIDA) राज्य में विभिन्न एक्सप्रेसवे के विकास में लगी हुई है। हाई स्पीड कॉरिडोर के साथ आसपास के राज्यों और राष्ट्रीय राजधानी के साथ पूरे राज्य की कनेक्टिविटी का विस्तार करने के लिए (UPEIDA) सरकार के फ्लैगशिप प्रोग्राम के तहत विभिन्न मार्गो एवं एक्सप्रेसवे विकसित कर रहा है। एजेंसी (UPEIDA) ने प्रस्तावित एक्सप्रेसवे के लिए मुख्य कैरिजवे के लिए सड़क के ज्यामितीय डिजाइन, इंटरचेंज तत्वों के लिए ज्यामितीय मानकों के लिए प्रारंभिक सांकेतिक डिजाइन मानक तैयार किया है। चयनित डिजाइन गति भी ज्यामितीय और सड़क घटकों के लिए 120 किमी/घंटा की रफ्तार पर डिजाइन की गई है। मैदानी और ढलान वाले इलाकों में एक लेन की चौड़ाई 3–75 मीटर ली गई है। थ्री लेन कैरिज वे की चौड़ाई 11–25 मीटर प्रस्तावित है। उच्च गति वाले वाहनों के बेहतर गति प्रबंधन के लिए टोल प्लाजा) एटीएम और इलेक्ट्रॉनिक टोल बूथ प्रस्तावित हैं और तदनुसार डिजाइन की गयी है। जानवरों के प्रवेश को रोकने के लिए थ्री बीम टाइप का सेफ्टी/क्रैश बैरियर प्रस्तावित है। अन्य सुरक्षा सुविधाओं में ड्राइवरों को श्रव्य चेतावनी प्रदान करने के लिए एलिवेटेड प्रोफाइल लाइन ऑन साइड शामिल हैं।

गंगा नदी अपनी सहायक नदियों की सहायता से लगभग दस लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के अति विशाल उपजाऊ मैदान बनाती है। इस ,क्सप्रेसवे की वजह से आर्थिक गतिविधियॉ बड़ी तेजी से बढेगी। यह एक्सप्रेसवे सामाजिक–आर्थिक विकास के साथ–साथ व्यापार, पर्यटन और उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। यह योजना प्रमुख कस्बों और शहरों के पर्याप्त क्षेत्र के बीच सीधा जुड़ाव प्रदान करेगी और राज्य के महत्वपूर्ण शहरों के बीच तेजी से व्यापार लिंक की सुविधा भी प्रदान करेगी।

साथ लेकर चलती हूँ सबको, चाहे कंकड़ हो चाहे झाड़
बना दूँ उपजाऊ बंजर को, मैं ऐसी गंगा हूँ तारनहार।

अब तुम भी मंजिल तय करना, मैं भी हूँ तेरे साथ,
दोनो मिलकर बढ़ा देंगे, प्रदेश में विकास की रफ्तार।

संजय कुमार
उप महाप्रबन्धक (परि.)

सतर्कता से भ्रष्टाचार पर नियन्त्रण

सावधानी हटी, दुर्घटना घटी। हमें गाड़ी चलाते समय सड़को के नियमों का ध्यान रखना होता है जैसे ही नियमों का उल्लंघन किया या गाड़ी चलाते समय हमारा दिमाक दूसरी तरफ गया, तुरन्त दुर्घटना होती है। वही नियम भ्रष्टाचार का है। हमारी सर्तकता हटी नही कि हमसे गलती हो जाती है। फिर विजिलेंस जाँच का कोण बनता है, जिसमें हम सालों सालों पिसते रहते है। इसलिए कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई गाइड लाइन्स का शत प्रतिशत पालन करें। किसी देश को उन्नति के शिखर पर ले जाने के लिए हर नागरिक को ईमानदार होना चाहिए। एक ईमानदार राष्ट्र भक्त ही अपने देश को ऊचाइयों पर ले जा सकता है। भ्रष्टाचार मिटाने के लिए वहॉ की जनता का सहयोग अपेक्षित होता है। सतर्क और जागरूक रहना किसी भी इन्सान, समाज और देश के विकास के लिए बहुत सहायक होता है जो समाज या राष्ट्र जागरूक और सतर्क नहीं होता उसे बड़ी ही तकलीफें उठानी पड़ती है, जिसका एक उदाहरण हम अपने देश के रूप में ले सकते हैं, जो असतर्कता में सैकड़ों सालों तक गुलाम रहा और आजादी के लिए एक बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। अतः देश की समृद्धि हेतु देश का सतर्क होना अति आवश्यक है।

सतर्कता का अर्थ है विशेष रूप से कर्मियों और समान्य रूप से संस्थानों की दक्षता एवं प्रभावशीलता की प्राप्ति के लिए स्वच्छ तथा त्वरित प्रशासनिक कार्यवाही सुनिश्चित करना, क्योंकि प्रायः देखा गया है कि जो समाज एवं देश सतर्क और जागरूक नहीं होता है तो उसे बहुत ही कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। भारत देश को जागरूक और सर्तक बनाने के लिए केन्द्रीय सकर्तता आयोग के द्वारा हर वर्ष अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह को 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के रूप में मनाया जाता है। इसके मनाने का यह कारण है कि सरदार पटेल जी का जन्म 31 अक्टूबर को हुआ था और उनका भारत को एकत्रित और जागरूक करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिसमें भृष्टाचार से मुक्ति पर जोर दिया गया था।

हमारा भारत पूरी दुनिया में एक प्रसिद्ध देश है यह दुनिया भर में अपने महान सांस्कृतिक और पारम्परिक मूल्यों के लिए जाना जाता है, इसके अतिरिक्त भारत विविधता में एकता कहलाने वाला महान देश है, क्योंकि विभिन्न धर्मों, जातियों, संस्कृति और परंपरा के लोग एकता के साथ यहाँ रहते हैं। इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य देश के नागरिकों को भृष्टाचार से लड़ने हेतु जागरूक करना और लोक प्रशासन प्रणाली में ईमानदारी सुनिश्चित करना है। इसके अतिरिक्त पारदर्शिता, जवाबदेही और भृष्टाचार मुक्त शासन के प्रति आम आदमी विशेषकर युवाओं में जागरूकता पैदा करना है।

भृष्टाचार एक ऐसी कुरीति है जो समाज ओर देश के विकास में बाधा करती है। यदि हमें ऐसी कुरीति से अपने समाज को मुक्त करना है तो हमें मिलजुल कर प्रयास करने की जरूरत है। सतर्कता तथा जागरूकता की शुरूआत हमें स्वयं से ही करनी होगी तभी जाकर हमारा देश 'सतर्क भारत समृद्ध भारत' बनेगा।

दीपक कुमार
प्रबन्धक (विधि)

यदि आप सौ व्यक्तियों की सहायता नहीं कर सकते तो केवल
एक ही जरूरतमंद की सहायता करें।

भारत के विकास में महिलाओं की भूमिका

महिलायें समाज के विकास एवं तरक्की में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। उनके बिना विकसित समाज व समृद्ध भारत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भारत राष्ट्र के विकास के लिए यह बेहद जरूरी है कि महिलाओं को शिक्षा में किसी भी प्रकार की कमी न आने दें। ब्रिंद्यम यंग के द्वारा एक कहावत भी है कि 'अगर आप एक आदमी को शिक्षित कर रहे हैं तो सिर्फ एक आदमी ही शिक्षित हो रहा है, परन्तु अगर आप एक महिला को शिक्षित कर रहे हैं तो पूरा परिवार शिक्षित हो रहा है।

महिलाओं के बिना उभरते भारत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आजकल कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है चाहे वह रक्षा का, तकनीकी का, अन्तरिक्ष का या चाहे व्यापार मंडल का, आप कोई भी नाम लो उस क्षेत्र में महिला अग्रणी भूमिका निभा रही है। इसका प्रमाण यह है कि भारत राष्ट्र की प्रधानमंत्री अनेक वर्ष एक महिला श्रीमती इंदिरा गांधी रही हैं व वर्तमान में कई मंत्री महिलाएं रह चुकी हैं। राष्ट्र की तीनों सेना के अंगों में महिलायें एक प्रमुख भूमिका निभा रही है। अभी जितने भी रॉकेट अन्तरिक्ष में छोड़े जा रहे हैं, इसरो की टीम में 38 प्रतिशत से अधिक महिलायें ही हैं। विज्ञान के क्षेत्र में इनकी भूमिका सराहनीय है।

नारी को देवी, सह धर्मिर्णी, अर्धांगिनी, मॉ, दादी, नारी, पुत्री आदि सभी रूपों में इनकी भूमिका बहुत ही जबरदस्त रही है। भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। इसमें युगानुरूप परिवर्तन होते रहते हैं। वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल से ही भारत में महिलाओं की गौरवमयी स्थान प्राप्त था। समृतिकाल में भी––––

'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमते तत्र देवताः'

कह कर उसे सम्मानित किया गया है। उपरोक्त का अर्थ है कि जिधर नारी को पूजा जाता है, उधर देवता वास करते हैं।

आज की नारी राजनीति, कारोबार, कला व नौकरियों में पहुंचकर नये आयाम गढ़ रही हैं। ऑकड़े दर्शाते है कि प्रतिवर्ष कुल परीक्षार्थियों में 50 प्रतिशत डाक्टरी की परीक्षा उत्तीर्ण करती हैं। हर साल लगभग 10वीं व 12वीं कक्षा में छात्रायें ही टाप कर रही हैं। आज़ादी के बाद 12 महिलायें विभिन्न राज्यों की मुख्यमंत्री बन चुकी हैं। भारत के साफ्टवेयर उद्योग में 27 प्रतिशत महिलायें ही हैं।

यदि हमें विकास करना है तो महिलाओं का उत्थान करना ही होगा। महिलाओं का विकास होने पर समाज व देश का विकास अपने आप हो जायेगा।

संवैधानिक अधिकारों में विभिन्न कानूनों के द्वारा महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार मिलने से उनकी स्थिति में परिवर्तन हुआ है। वर्तमान समय में सरकारों द्वारा विभिन्न योजनाएं व कार्यक्रमों द्वारा महिलाओं का सशक्तिकरण हो रहा है। भारतीय नारी, संसार की अन्य किसी भी नारी की भॉति अपनी समस्याओं को सुलझााने की क्षमता रखती है। आवश्यकता है उन्हें उपयुक्त अवसर देने की। इसी आधार पर भारत के उज्जवल भविष्य की संभावनायें सन्निहित हैं।

राजीव शर्मा
उप महाप्रबन्धक (आई.टी.)

हडको की स्वर्ण जयन्ती–स्मृति एवं योगदान

हमारी कम्पनी को 'द हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट फाइनेंस कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड' के रूप में 25 अप्रैल, 1970 को कम्पनी अधिनियम, 1956 के तहत एक निजी क्षेत्र की लिमिटेड कम्पनी के रूप में शामिल किया गया था, और तत्कालीन रजिस्ट्रार आफ कम्पनी, दिल्ली द्वारा निगमन का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया था। इसके बाद हमारे कम्पनी का नाम बदलकर हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड कर दिया गया और 9 जुलाई 1974 को निगमन का नया प्रमाण पत्र तत्कालीन रजिस्ट्रार आफ कंपनीज, दिल्ली और हरियाणा द्वारा जारी किया गया। हमारी कंपनी को 9 दिसम्बर, 1996 को कम्पनी मामलों के मंत्रालय, वित्त मंत्रालय भारत सरकार द्वारा कम्पनी अधिनियम 1956 की धरा 4ए के तहत एक सार्वजनिक वित्तीय संस्था के रूप में अधिसूचित किया गया था। इसके अलावा एनएचबी ने 31 जुलाई, 2001 की हमें आवास एवं वित संस्थान के व्यवसाय को चलाने की अनुमति देते हुए पंजीकरण का प्रमाण पत्र जारी किया।

हमारी कंपनी की मुख्य वस्तुएं जो मेमोरण्डम में निहित हैं:–

आवासी उद्देश्यों या वित्त के लिए घरों के निर्माण के लिए दीघ्रकालीन वित्त प्रदान करना या देश में आवास और शहरी विकास कार्यक्रम शुरू करना।

वित्त या उपक्रम, पूर्ण या आंशिक रूप से नए या उपग्रह शहरी की स्थापना।

राज्य आवास और शहरी विकास बोर्ड, सुधार ट्रस्ट विकास प्राधिकरण आदि द्वारा जारी किये जाने वाले बाण्ड की सदस्यता के लिए, विशेष रूप से आवास और शहरी विकास कार्यक्रमों के लिए वित्त पोषण।

निर्माण सामग्री के औद्योगिक उद्देश्यों की स्थापना के लिए वित्त या उपक्रम करना।

भारत सरकार और अन्य श्रोतों से समय–समय पर प्राप्त धन की प्रशासन के लिए या देश में आवास और शहरी विकास कार्यक्रमों के वित्त पोषण या उपक्रम में प्रयोजन के लिए।

भारत एवं विदेशों में आवास और शहरी विकास कार्यक्रमकों से संबंधित कार्यो की डिजाइनिंग और नियोजन की परियोजनाओं के लिए परामर्श सेवाओं को बढ़ावा देने, स्थापित करने, सहयोग और सेवा प्रदान करना।

आवास और शहरी विकास क्षेत्रों में वेंचर कैपिट फण्ड के कारोबार को शुरू करने के लिए इन क्षेत्रों में नवाचारों की सुविधा और उपरोक्त क्षेत्रों में सरकार/सरकारी एजेंसियों द्वारा पदोन्नत वेंचर कैपिटल फण्ड्स की इकाईयों और शहरी में निवेश एवं सदस्यता लेना।

हडको की अपना म्युचुअल फण्ड स्थापित करने के लिए एवं इसकी सदस्यता लेने के लिए जिसका प्रयोजन शहरी विकास के लिए किया जायेगा।

उपरोक्त वस्तुएं मेमोरण्डम एसोसिएशन में शामिल मुख्य वस्तुओं के लिए मुख्य वस्तुखण्ड और वस्तुएं आकस्मिक एवं सहायक है, जो हमारे कंपनी को अपनी मौजूदा गतिविधियों की करने में सक्षम बनाती हैं।

हडको ने स्वर्ण जयंती वर्ष में सम्पूर्ण देश के गौरवशाली इतिहास विरासत, समृद्ध करना और संस्कृति के अनूठे अंदाज में दुनिया के सामने पेश करने का रोड मैप बना लिया है। इससे भावी विज़न को 50 वर्ष मना रही हमारी कंपनी ने कार्यक्रमों का ख़ाका स्वर्ण जयंती समाराहों के लिए स्तरीय समिति जिसकी अध्यक्षता माननीय अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक की उपस्थिति में हुयी बैठक में जारी किया जिसमें कुछ लक्ष्य तय किये गये हैं, ये लक्ष्य निम्न हैं:–

– हडको में 50 स्वर्णिम लक्ष्य भी इस उम्मीद से तय किये हैं कि जो हमारे देश के भविष्य के लिए फायदेमंद होंगे।
– यह स्वर्णिम लक्ष्य आगामी दशक में राज्य के विकास के लिए एवं विजन और रोड मैप दोनों होगा।

हडको ने अपने मिशन पॉच में निम्न को सम्मलित किया है:–

– वर्ष में दस लाख आवासों का निर्माण।
– दो वर्षों में संचयी ऋण आहरण की सीमा एक लाख करोड़
– एक हज़ार करोड़ की आय (लाभ टैक्स छोड़कर)
– सौ स्थानीय निकायों को सहायता प्रदान करना।
– प्रतिवर्ष 1 प्रतिशत ग्रास एनपीए को कम करना।

इसके अलावा हडको का निगमित सामाजिक दायित्वों के जरिए प्रत्येक दिन नये–नये आवास जोड़े जा रहे है।

हडको के मील के पत्थर:

1970 – हडको की स्थापना महज दो करोड़ रूपये की इक्विटी से शुरू हुई।
1974 – लागत कास्ट का पुनरूत्थान संशोधित वित्त पोषण पैटर्न जहॉ विभिन्न आय समूहों जैसे ईडब्लूएस, एलआईजी, एमआईजी और एचआईजी के अनुरूप अंतर ब्याज दरों में अपनाया गया है।
1976 – निम्न कास्ट हाउसिंग डिजाइन प्रतियोगिता भारत में पहली बार आयोजित की गयी जिसमें हडको के कुल 6 लेख पुरस्कृत हुए।
1977 – ग्रामीण आवास की शुरूआत।
1979 – शहरी विकास योजना की शुरूआत।
1981 – लोक भूमि पर स्लम क्षेत्र के विकास की शुरूआत हुई।
1983 – क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापना–
1985 – कंसल्टेंसी अनुबन्ध की शुरूआत।
1988 – ग्रामीण क्षेत्र विकास कार्यक्रम की शुरूआत।
2015 – एएए रैंक से सम्मानित हुई।
2017 – राजभाषा कृर्ति पुरस्कार से सम्मानित।
2018 – आईएसओ 9001:2015 से सम्मानित हुई।

आशा है कि भविष्य में भी हडको इसी प्रकार सफलता के नए आयाम प्राप्त करता रहेगा।

सुनील कुमार
वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)

सतर्क भारत समृद्ध भारत

सिर्फ और सिर्फ सतर्कता के द्वारा ही हम किसी भी प्रकार के देशों, अपराधों, बीमारियों या अन्य किसी भी प्रकार की नकारात्मक चीजों से बच सकते हैं, फिर भ्रष्टाचार तो एक छोटी बीमारी है। हॉ, यह एक सामाजिक और आर्थिक दोनों प्रकार की बीमारी है। यह बिल्कुत सही नहीं है कि भ्रष्टाचार को खत्म किया जा सकता है। भ्रष्टाचार संसार में आदिकाल से है, भ्रष्टाचार को सिर्फ कम किया जा सकता है, बिल्कुल खत्म नहीं।

आज भारत का करप्शन परसेप्शन इंडेक्स (एक प्रकार का वैश्विक इंडेक्स) के अनुसार 80वॉ स्थान है, जो कि पहले कभी 120वॉ हुआ करता था। आज भारत में भ्रष्टाचार पहले से काफी कम हुआ है, जिसके लिए भारत सरकार की नीतियों एवं पारदर्शिता काफी हद तक जिम्मेदार है। भारत के मुकाबले में चीन व रूस जेसे देशों में अधिक भ्रष्टाचार है।

गरीबी, भुखमरी, बेरोज़गारी, बढ़ती मंहगाई भ्रष्टाचार का ही तो परिणाम है। आज भ्रष्टाचार की वजह से गरीब और गरीब हो रहा है, और अमीर और अमीर। आज भारत की अर्थव्यवस्था को 2 प्रतिशत से भी कम लोग चला रहे हैं। जबकि भारत 138 करोड़ लोगों का है।

मुंशी प्रेमचंद्र की एक कहानी 'नमक का दरोगा' के अनुसार 'रिश्वत एक बहता हुआ सदाबहार झरना है, जो हमेशा प्यास बुझाता है जबकि मासिक आय सिर्फ एक पानी का गिलास'। इस झरने रूपी सोंच से बचने की आवश्यकता है।

महात्मा गांधी ने कहा है कि रिश्वत लेना अन्याय है' जबकि हमारे यहॉ समझा गया कि यह अन्य आय है। सरदार बल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस पर मनाने वाला पर्व 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' है, जो कि लोगों में ईमानदारी सत्यनिष्ठा और जवाबदेही को प्रोत्साहित करता है। प्रत्येक नागरिक को अपने देश के प्रति सतर्क और प्रतिबद्ध होना चाहिए।

सतर्क व समृद्ध भारत का अर्थः

इसका अर्थ है कि हर भारतवासी और भारत में काम करने वाले हर संस्थानों को उनके दिये गये उद्देश्य व लक्ष्यों को ईमानदारी, त्वरित प्रशासनिक कार्यो, स्वच्छता एवं दिशा निर्देशों द्वारा प्राप्त करना है, क्योंकि जो समाज या देश जागरूक नही होगा, सतर्क नहीं होगा, उसका विकसित होना थोड़ा मुश्किल है। अतः हम सभी लोगों का फर्ज है कि जागरूक बनें, सतर्क बनें। आजकल कुछ लोग यह भी कहते हैं कि 'ईमानदार वो होता है जिसे बेइमानी का मौका नही मिला। इससे पता चलता है कि भ्रष्टाचार किस गहराई तक हमारे दिलो–दिमाग में पहुॅच गया है।

भ्रष्टाचार क्यों और कैसेः

वैसे तो भ्रष्टाचार की परिभाषा को सीधे सरकार और सरकारी कर्मचारियों को जोड़कर देखना चाहिए लेकिन यदि इसकी परिभाषा को थोड़ा बड़ा करते हैं तो इसका क्षेत्रफल सारे समाज की हर पहलू को छूता है। कोई भी क्षेत्र या सेक्टर ऐसा नही है, जहॉ भ्रष्टाचार का बोल–बाला न हो।

आखिर भ्रष्टाचार क्यों होता है? कुछ कारण निम्न हैंः–

– देश का लचीला कानून।
– न्याय मिलने में देरी।
– स्वार्थ व असंतोष।
– समाज में असमानता।

– महत्वाकांक्षी व लोभी स्वभाव।
– मनुष्य/व्यक्ति का आचरण।
– दबाववश भ्रष्टाचार।
– सख्त कानून का न होना।

उपरोक्त की वजह से न जाने कितने ही घोटाले हुए, जिनका घोटाला इतना है कि जैसे लगता है कि किसी छोटे देश का कुल बजट। कुछ घोटाले निम्न प्रकार हैं:–

– कोयला घोटाला।
– 2–जी स्पेक्ट्रम घोटाला।
– वक्फ बोर्ड घोटाला।
– राष्ट्र मण्डल खेल घोटाला।
– तेलगी घोटाला।
– चारा घोटाला, हर्षद मेहता घोटाला, बोफोर्स घोटाला, भर्ती घोटाला और न जाने क्या, क्या––––––।

अब मुख्य सवाल है कि इनको रोका कैसे जाए? या रोक भी सकते हैं कि नहीं। भ्रष्टाचार बढ़ने का मात्र एक कारण है कि भ्रष्टाचार का साथ देना या उसको होने देना। भ्रष्टाचार इसलिए होता है कि हम उसको होने देते हैं। हमें जहॉ तक हो सके इसका विरोध करना चाहिए और इसके विषय में सतर्कता और जागरूकता प्रदान करना चाहिए।

भ्रष्टाचार निवारण बिल (संशोधन–2013), इसके द्वारा सरकार ने भ्रष्टाचारियों पर लगाम लगाने की कोशिश की है, जो सराहनीय है।

हालॉकि पूर्णतया भ्रष्टाचार रोका नहीं जा सकता, परन्तु कम करने के कुछ उपाय निम्न हो सकतें हैं:–

– कर्मचारियों को अच्छा वेतन व सुविधाएं।
– दफ्तरो में लोगों की कमी न हो।
– कम्प्यूटराईज़ेशन (जिससे कम से कम लोग इन्वाल्व हों)।
– संक्षिप्त व कारगर कानून।
– लोकपाल कानून लागू करना आवश्यक।
– हर कार्यालय में सीसीटीवी कैमरे।
– कानून की प्रक्रिया में समय का सदुपयोग।
– टैट (टर्न एराउन्ड टाइम–वो समय जितने में काम पूरा हो जायेगा), उसको फिक्स करके।
– स्पीडी जजमेंट देकर।
– भ्रष्टाचारियों की मदद लेकर, भ्रष्टाचारियों को पकड़ना।

भ्रष्टाचार प्रशासन का एक बड़ा हिस्सा बन चुका है। कहावत है कि 'रिश्वत लेते पकड़े जाओ, तो रिश्वत देकर छूट जाओ'। भ्रष्टाचार देश की उन्नति में सबसे बड़ा बाधक बन चुका हैं जिसकी वजह से देश व समाज को क्षति पहुंच रही है। इसको दूर करने का सिर्फ एक ही मंत्र है कि सतर्क रहें, तभी भारत समृद्ध होगा।

श्री दिनेश चन्द्र बधानी
एएफ (एसजी)

भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात

भारतीय संस्कृति का आदि श्रोत वैदिक दर्शन है। ऋग्वेद में दर्शन, संस्कृति व सभ्यता के महत्वपूर्ण श्रोत हैं। परन्तु आज मनुष्य अपनी संस्कृति को भूलता जा रहा है और पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने की होड़ सी लगाये हुए है। हमारी प्राचीन संस्कृति में बहुत कुछ या यह कहें कि सर्वस्व गुण विद्यमान हैं जो पाश्चात्य संस्कृति में देखने को भी नहीं मिलता है। आधुनिकता तो ठीक है, परन्तु यह ठीक नहीं है कि वह अपने संस्कारों को भूल जाए।

मनुष्य अपनत्व में जीना चाह रहा है और हमारे समाज में ऐसा हो भी रहा है। जो मैंने बचपन में देखा है वह आज देखने को नहीं मिल रहा है। तब संयुक्त परिवार अधिकतर होते थे विरला ही एकल परिवार देखने को मिलता था और आज बिल्कुल उसके विपरीत है अर्थात् आज विरला ही संयुक्त परिवार देखने को मिलता है। माता–पिता भाई–बहन के साथ न रहकर वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अकेले रहना चाहता है। बड़ों का आदर भूलता जा रहा है। माता–पिता की सेवा करने में उसकी कोई रूचि नहीं रहती है, लेकिन वह यह भूल जाता है कि भविष्य में उसका अपना पुत्र भी ऐसा कर सकता है, क्योंकि समाज या घर का जैसा परिवेश होगा उसका असर भी उसके बच्चे पर पड़ेगा। समाज में लोगों की धारणा बिल्कुल बदल रहीं है और वह अपने को अलग और श्रेष्ठ दिखाने में लगा रहता है। तरह–तरह के दिखावे में जीता है। इन्हीं सब आडम्बरों के कारण समाज में अनेक प्रकार की कुरीतियॉ फैल गयी हैं। मनुष्य एक दूसरे को नीचा दिखाने में लगा रहता है, जो हमारी संस्कृति पर बहुत बड़ा कुठाराघात है।

आज मनुष्य पैसे के पीछे भाग रहा है और पैसे की लालच में आकर बुरा कार्य भी करने लगता है। आज पैसे के लिए लोग माता–पिता और भाई–बहन का खून भी कर देते हैं। इसीलिए हमारे देश में भ्रष्टाचार का ग्राफ दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। हम सबको इस चुनौतियों से निपटने के लिए एक साथ कार्य करने की जरूरत है।

सब एक दूसरे की सहायता करने के लिए हर समय तत्पर रहे और जो लोग या समाज इस प्रकार की कुरीतियों में लिप्त हैं उनको समझाकर, दबाव बनाकर या कानून का सहारा लेकर उन्हें रास्ते पर लाने की कोशिश करनी चाहिए, जिससे कि उन्हें सही रास्ते पर लाया जा सके।

रवि रंजन चौधरी
प्रबन्धक (वित्त)

सब्र एक ऐसी सवारी है जो अपने सवार को कभी गिरने नही देती,
ना किसी के कदमों में, न किसी की नजरों में।

आजादी के 75 वर्ष – अमृत महोत्सव

1947 में हमें अग्रेजों की गुलामी से आजादी मिली। हम आजादी के 75 वर्ष पूरे कर चुके हैं। 75वें वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। यह समारोह 15 अगस्त 2023 तक चलेगा। अब हमें नया भारत बनाना है। इस नये भारत में प्रधानमंत्री जी द्वारा 15 अगस्त 2022 को 05 नये प्रण के संकल्प लिये गये हैं, उन्हें हम सभी 135 करोड़ देशवासियों को पूरा करना है। भारत एक विकासशील देश है – यह 75 वर्षो से बोला जा रहा है। हम कब तक ऐसा बोलते रहेगे। इसलिए नया विकसित नया भारत बनाने का लक्ष्य लेकर चलना होगा, ताकि जब हम आजादी का शताब्दी वर्ष मना रहे हों, तब हम एक विकसित देश में हों। इसके लिए अभी से विकसित भारत बनाने का संकल्प लेना होगा। इसके लिए अभी हमारे पास 25 वर्ष का समय भी है। इसी कड़ी में आज दिनांक 02 सितम्बर 2022 को अरब महासागर में हिन्दुस्तान कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड का बना स्वदेशी युद्धपोत आईएनएस विक्रान्त सेना को सौंपा जा रहा है। यह आईएनएस विक्रान्त रूपये 20 हजार करोड़ की लागत से बनकर तैयार हुआ है। इसमें 76 प्रतिशत स्वदेशी सामाग्री का उपयोग किया गया है। मेक इन इंडिया मुहिम में यह मील का पत्थर है। स्वदेशी एयरक्राफ्ट कैरियर के साथ ही भारत उन देशों के ग्रुप में शामिल हो गया है, जिसके पास बड़े और जटिल वारशिप बनाने की क्षमता है। अब तक अमेरिका, रूस, चीन फ्रांस, बिट्रेन के पास ही एयरक्राफ्ट कैरियर वारशिप बनाने की क्षमता थी।

प्रधानमंत्री जी का दूसरा प्रण कि हम गुलामी की चीजों को तिलांजलि दे दिया जाय। हम गुलामी के समय की चीजों पर गर्व करना भूल जाय। गुलामी की मानसिकता से बाहर निकलें। हम उन गुलामी के विचारों से बाहर निकलें। हमारे किसी कोने में गुलामी का अंश न रह जाय। दुनिया हमें कब तक सर्टीफिकेट देती रहेगी। हमें अपने मानक बनाने चाहिए। हमें किसी ही हालत में दूसरों जैसा दिखने की जरूरत नही है। हम जैसे है उसी सामर्थ्य के साथ खड़े होंगे। हमारे देश में बहुत से ऐसे कानून है जिनका आज के समय कोई उपयोग नही है। ऐसे कानूनों को रद्द किया जाय, और सरकार इस दिशा में कार्य कर भी रही है। अब तक 800 कानून रद्द किये जा चुके है।

तीसरा प्रण हमें अपने विरासत पर गर्व होना चाहिए। हमारी यही विरासत है जिसने कभी भारत को स्वर्णिम काल दिया था। हमारी यही विरासत है जो पुरातन पर गर्व करने के साथ–साथ नूतन को स्वीकर भी करती है। हमारी विरासत में पर्यावरण जैसी समस्या का समाधान रहा है। हमारी वह संस्कृति है जो जीव में शिव देखती है और कंकर में शंकर देखती है। हमारी यह परम्परा ही बताती है कि कैसे पर्यावरण के साथ रहा जा सकता है।

चौथा प्रण यह है कि देश में एकता रहे और एकजुटता रहे। देश के 135 करोड़ देशवासी एक रहें। श्रम को अच्छे नजरिए से देखना होगा और श्रमिको का सम्मान करना होगा।

देश के नागरिको का चौथा प्रण होना चाहिए–नागरिको कर्तव्य। इस कर्तव्य में प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री भी शामिल है। सरकार का कार्य है नागरिकों को बिजली दे तो नागरिको का भी कर्तव्य है कि देश हित में बिजली की बचत करे। सरकार का कार्य है पानी दे तो नागरिको का कर्तव्य है पानी की बचत करें।

देश के 135 करोड़ देशवासी यदि इन प्रणों को पूरा करने में अपना योगदान देंगे तो जब हम शताब्दी वर्ष मना रहे होंगे। तब हम विकसित भारत होंगे।

सुनील कुमार
वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)

उपरोक्त चित्र में हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ द्वारा आजादी के अमृत महोदत्सव पर सभी कर्मयोगियों द्वारा अपने घरों पर तिरंगा फहराया गया।

भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है जो लगभग पांच हज़ार वर्ष पुरानी है। विश्व की पहली और महान संस्कृति के रूप में भारतीय संस्कृति को माना जाता है। विभिन्न संस्कृति और परम्परा के रह रहे लोग यहां सामाजिक रूप से स्वतंत्र हैं इसी वजह से धर्मों की विविधता में एकता के मज़बूत संबंधों का यहां अस्तित्व है।

समृद्ध संस्कृति और विरासत की भूमि है भारत जहां लोगों में इंसानियत, उदारता, एकता, धर्मनिर्पेक्षता, मज़बूत सामाजिक संबंध और दूसरे अच्छे गुण हैं। दूसरे धर्मों के लोगों दवारा ढेर सारी क्रोधी क्रियाओं के बावजूद भी भारतीय हमेशा अपने दयालु और सौभ्य व्यवहार के लिए जाने जाते हैं। अपने सिद्धांतों और विचारों में बिना किसी बदलाव के अपनी सेवा भाव और शांत स्वभाव के लिए भारतीयों की हमेंशा तारीफ होती है। भारत महान किंवदतियों की भूमि है जहां महान लोंगो ने जन्म लिया और ढेर सारे सामाजिक कार्य किये।

वह आज भी हमारे लिए प्रेरणादायी व्यक्तित्व है। भारत महात्मा गांधी की भूमि है जहां उन्होंने लोंगों में अहिंसा की संस्कृति पल्लवित की है। उन्होंने हमेशा हम लोंगों से कहा कि अगर तुम वाकई बदलाव लाना चाहते हो तो दूसरों से लड़ाई लड़ने के बजाए उनसे विनम्रता से बात करो। उन्होंने कहा कि इस धरती पर सभी लोग प्यार, आदर सम्मान और परवाह के भूखे हैं। अगर तुम उनको सबकुछ दोगे तो निश्चित ही वह तुम्हारा अनुसरण करेंगे।

गांधी जी अहिंसा में हमेशा विश्वास करते थे अंग्रेज़ी शासन से भारत के लिए आज़ादी पाने में एक दिन वह सफल हुए। उन्होंने भारतीयों से कहा कि अपनी एकता और विनम्रता की शक्ति दिखाओ तब बदलाव देखो। भारत पुरूष और स्त्री जाति और धर्म आदि का देश नहीं है बल्कि ये एकता का देश है जहां जाति और संप्रदाय के लोग एक साथ रहते हैं।

भारत में लोग आधुनिक हैं और समय के साथ बदलती आधुनिकता का अनुसरण करते हैं फिर भी वो अपनी सांस्कृतिक मूल्यों और पंरपरा से जुड़े हुए हैं। भारत एक अध्यात्मिक देश है जहां लोग आध्यात्म में भरोसा करते हैं। यहां के लोग, ध्यान और दूसरे अध्यात्मिक क्रियाओं में विश्रवास रखते हैं। भारत की सामाजिक व्यवस्था महान है जहां लोग आज भी संयुक्त परिवार के रूप में अपने दादा–दादी, चाचा, ताऊ, चचेरे भाई–बहन आदि के साथ रहते हैं।

इसलिए यहां के लोग जन्म से ही अपनी संस्कृति और पंरपरा के बारे में सीखते हैं।

आरती शर्मा
वरिष्ठ प्रबन्धक (सचि.)

देश हमें देता है सब कुछ, हम भी कुछ देना सीखें।

अहंकार

जलकाक का एक समूह साँझ के समय समुद्र के किनारे से जा रहा था। सभी आपस में बाते करते हुये उड रहे थे। तभी एक कौवा उनका मज़ाक उडाने की कोशिश करने लगा। और उन्हे कहने लगा तुम लोग पंख फैलाकर उड़ने के सिवा कर ही क्या सकते हो। पंख फैलाकर जाना और पंख फैलाकर उड़ते हुये वापस आना यही तुम्हारा रोज़ का रुटीन होता है। क्या तुम मेरे जैसे चतुराई से हवा में तेज़ उड़ सकते हो। मै रोज़ हवा में कितने करतब करता हूँ और कितने मज़े लेता हूँ । लेकिन यह सब तुम सब से न होगा। भला तुम सब यह कैसे कर सकते हो। कौवे की बाते सुनकर तभी एक सबसे समझदार व बुढा जलकाक बोला लेकिन तुम्हे अहंकार नही करना चाहिये। अगर तुममे यह विशेषता है तो यह क्या अच्छी बात है। तुम चतुराई से उड़ सकते हो। लेकिन इस पर तुम्हे गुमान नही करना चाहिये।

लेकिन निन्दा व अंहकार में डूबे कौवे को यह बात समझ में नही आयी। वह कहने लगा यह कोई बात नही हुयी। यदि तुम में सामर्थ्य है तो मुझसे प्रतियोगिता करो और मुझसे जीतकर दिखाओ। फिर एक समझदार जलकाक ने कौवे की प्रतियोगिता वाली बात स्वीकार कर ली। जलकाक ने प्रतियोगिता को दो भागो में होना तय किया और कहा प्रतियोगिता के पहले भाग में कोवा अपने करतब दिखायेगा और मुझे भी ठीक उसी प्रकार करना होगा। दूसरे भाग में जो करतब मै दिखाउँगा वही सब कौवे को भी करना होगा। कौवा तैयार हो गया। प्रतियोगिता अगले दिन रखी गयी। सुबह होते ही कौआ वही समुद्र के किनारे आ गया। प्रतियोगिता का पहला भाग शुरु हुआ। कौआ ने शर्त के अनुसार पहले उड़ना शुरु किया वह पूरी जान से उड़ रहा था व कई प्रकार के करतब हवा में करने लगा।

जलकाक ने भी वैसा करने की पूरी कोशिश की लेकिन वह कौवे के समान नही कर पाया। कौवा कहने लगा मै तो पहले ही कह रहा था कि तुम लोग सीधे उड़ने के सिवा कुछ कर ही नही सकते हो। प्रतियोगिता का पहला भाग कौवे के पक्ष में रहा। अब प्रतियोगिता का दूसरा भाग शुरु हुआ। जलकाक समुद्र के ऊपर उड़ने लगा और वह घमण्डी कौवा भी उसके पीछे–पीछे उड़ने लगा। जलकाक सीधे उड़े जा रहा था। कौवा बोला ये क्या एक जैसा उड़े जा रहे हो यह भी कोई उडना हुआ। लेकिन वह समझदार जलकाक कुछ न बोला। और सीधे उड़ता रहा। कुछ देर बाद वह काफी दूर जा चुके थे। अब कौवा थक चुका था और चुपचाप से पीछे–पीछे उड़ रहा था।

धीरे–धीरे कौवे की सामर्थ्य खत्म हो रही थी लेकिन वह जैसे–तैसे उड़ रहा था व बीच–बीच में गिर के पानी के पास पहुंच जाता लेकिन जैसे–तैसे खुद को संभाल लेता। जलकाक चुपचाप से उड़े जा रहा था। उसे कौवे की स्थिति का अनुमान हो गया था। लेकिन वह चुप था। अब जब कौवे के जान पर बन आयी तो वह बोला भाई जलकाक मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया है। मुझसे बहुत बडी गलती हो गयी। अब तुम किसी तरह मेरी जान बचा लो, नही तो में पानी में डूब कर मर जाउँगा। आगे से कभी भी स्वंय पर अहंकार नही करुँगा।

अपनी गलती का एहसास होने पर जलकाक ने भी उसकी मदद करने की सोची और उसे क्षमा कर दिया। जलकाक ने उसे अपनी कमर पर बिठाया और उसे वापस समुद्र के किनारे पर छोड़ दिया।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कभी स्वंय पर अहंकार नही करना चाहिये। अहंकार होने पर बुद्धि का पतन हो जाता है जो हमारे विनाश का कारण बनता है।

अयाज़ उद्दीन
वरिष्ठ प्रबन्धक (परि.) एवं
हिन्दी नोडल अधिकारी

बड़बोलेपन की पराकाष्ठा

ना पद के प्रति, ना प्रतिष्ठा के प्रति
हृदय मे सम्मान है ईमानदार के प्रति, झूठ एवं छलावा आभूषण हो सकते हैं
पर अपनी सुन्दरता है शिष्टाचार के प्रति !

बड़बोलापन आजकल ज्ञान बन गया है
अपना शीश नमन हैं आत्म–सम्मान के प्रति,

आरोप प्रत्यारोप का दौर चरम पर है
हमारा शुभाशीष है चरित्रवान के प्रति,

नारे लगाना जब चलन बना दिया
अपना वाणी–वाक्य है प्रमाण के प्रति,

विध्वंस मे जब सामाजिकता दर्शा दी
अपना भाई–चारा है निर्माण के प्रति,

अंततः .....

ना सज्जन के प्रति
ना दुर्जन के प्रति
अपना समर्पण है सहसवान के प्रति।

डा. दीपक कुमार राय,
(प्रबन्धक विधि)
उर्फ चिराग़ फर्रूखाबादी

हिन्दी हमारा धर्म है

हिन्दी हमारी, हम हिन्द के,
हिन्दी हमारा कर्म है।
हिन्दी हमारा धर्म है।

हिन्दी हमारी पहचान है,
भारत की जान है।
हिन्दी हमारी शान है।
वीरों को नमन,
शहीदों को जयहिंद है।

हिन्दुस्थान की माटी से आती खूशबू हिन्दी में।
फूलों की मकरंद से आती हिन्दी में।
पेड़ो की छॉव से आती खूशबू हिन्दी में,
हिमवादियों से आती खूशबू हिन्दी में।
यही कविता है, यही निबन्ध है।
हिन्दी हमारा धर्म है।

झरनों की खलखलाहट आती हिन्दी में।
चिड़ियों की चहचाहट आती हिंदी में।
बादलों की गड़गड़ाहट आती हिंदी में।
सूरज मुस्कराता हिन्दी में।
हिन्दी कविता मे छन्द है।
हिन्दी हमारा धर्म है।

उत्तर से दक्षिण तब सब को भाँती है हिन्दी।
एकता के सूत्र में सबको पिरोती है हिंदी।
भारतीयता में रमने का धर्म है हिन्दी।
फिल्मों में गजलों में समायी है हिन्दी।
प्रांजल की कविता में नही कोई द्वन्द है।
हिन्दी हमारा धर्म है।

गीता की वाणी है, पुराणों की भाषा है,
वेंदो से अवतरित, संस्कृत की परिभाषा है।
भावों में आती तुम बनके, सरस्वती जिज्ञासा
प्रगति की लालसा हो बन जावो अभिलाषा।
हिन्दी हमारा धर्म है।

माया कुमारी
पत्नी श्री सुनील कुमार
प्रबन्धक (वित्त)

हिन्दी

लिये प्रखर संकल्प हृदय में, हिन्दी को आगे बढ़ायेंगे।
हिन्दी का गौरव वैभव, विश्व पटल पर फहरायेंगे।

कार्यालय की भाषा हो हिन्दी, हिन्दी करें प्रभावी प्रस्थापन।
स्वाभिमान की भाषा में हुकारे, करें लक्ष्य का प्रतिपादन।

उद्घोष जय हिंद का हिन्दी में मचवायेंगे।
हिन्दी का गौरव वैभव, विश्व पटल पर फहरायेंगे।

निर्भय होकर कार्य करेंगे, कुछ भी कठिन राह नही,
संकल्प शक्ति डिगा न सकते, त्रृटियों की परवाह नही,

हिन्दी को अपना माना है, तन–मन से कर्तव्य निभायेंगे।
हिन्दी का गौरव वैभव, विश्व पटल पर फहरायेंगे।

सबकी अपनी–अपनी भाषा है, हिन्दी जन जन की भाषा करनी है।
हॅसने मुस्कराने की भाषा है, मन के तारों को झंकृत करती है।

जो नही लिखते कभी हिन्दी, उनको भी हिन्दी सिखलायेंगे।
हिन्दी का गौरव वैभव, विश्व पटल पर फहरायेंगे।

लिये प्रखर संकल्प हृदय में, हिन्दी को आगे बढ़ायेंगे।
हिन्दी का गौरव वैभव, विश्व पटल पर फहरायेंगे।

———

सुनील कुमार 'प्रांजल'
वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)

कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर)

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (हडको) आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के अन्तर्गत भारत सरकार का एक उपक्रम है। देश भर में आवास और शहरी विकास गतिविधियों के क्षेत्र में सामाजिक न्याय के साथ लाभप्रदता के अपने आदर्श वाक्य के साथ सक्रिय संस्था है। समाज में अपने योगदान के लिए प्रतिबद्ध होने के कारण कॉर्पोरेट की सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के अन्तर्गत वित्तीय सहयोग गतिविधियां भी सम्मिलित है। हडको क्षेत्रीय कार्यालय ने उत्तर प्रदेश में विभिन्न गतिविधियों में अनुदान प्रदान किया है।

हडको सीएसआर के अन्तर्गत वीरांगना झलकारी बाई इंटर कालेज, गांव परौख, ब्लाक डेरापुर, ज़िला कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश में तीन कक्षाएं, लैब, प्रशासनिक कार्यालय शौचालय के साथ, सीढ़ी एवं गलियारे के निर्माण हेतु रूपये 75 लाख का वित्तीय सहयोग किया गया। जिसका भारत के राष्ट्रपति माननीय रामनाथ कोविंद द्वारा उदघाटन किया गया।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ में वृक्षारोपण अभियान

भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आज़ादी का अमृत महोत्सव (AKAM) के अवसर पर राष्ट्र निर्माण में सार्वजनिक उद्यम विभाग, भारत सरकार के योगदान के रूप में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में हडको सक्रिय रूप से गतिविधियों और परियोजनाओं को 06 जून से 12 जून, 2022 तक संचालन कर रहा है। उपरोक्त के अन्तर्गत मुख्यालय के अंतः कार्यालय ज्ञापन दिनांक 06.05.2022 के क्रम में हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ ने पिकप भवन के परिसर में वृक्षारोपण करने हेतु पिकप कार्यालय को उपरोक्त कार्यक्रम हेतु पत्र द्वारा सूचित किया। हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ ने पिकप परिसर में उचित स्थान पर कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा 14 वृक्षों का वृक्षारोपण कर वृक्षारोपण अभियान मनाया।

जैसा कि विदित है कि पिकप भवन में संघ लोक सेवा आयोग का कार्यालय होने के कारण बाहरी लोंगो का रोज़गार हेतु परीक्षा, साक्षात्कार व परिणाम देखने के लिए आना जाना लगा रहता है, इसको ध्यान में रखते हुए छायादार व फलदार वृक्षों को लगाया गया है जिससे कि बाहर से आये लोगों को विश्राम मिल सके। इसीलिए वृक्षारोपण में आम, जामुन, आंवला, बेल व अमरूद आदि फलों के वृक्षों को लगााया गया। वृक्षारोपण अभियान के दौरान लिये गये फोटोग्राफ की आख्या मुख्यालय भेजी गई है।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय ने उपरोक्त रिपोर्ट को admnhudco@gmail.com पर आवश्यक सूचना मुख्यालय को सूचित कर दिया है, जिससे कि हडको की रिपोर्ट निर्धारित समय पर मंत्रालय एवं अन्य संबन्धित कार्यालयों में भेजी जा सके।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह :

दिनांक 02.11.2022 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के लिए चुने गये स्लोगन :

हमें चाहिए समग्र विकास। भ्रष्टाचार का करेंगे नाश। – प्रथम पुरस्कार
श्री दीपक कुमार, प्रबन्धक (विधि)

भ्रष्टाचार मिटाना है। देश को समृद्ध बनाना है। – द्वितीय पुरस्कार
श्री राजीव शर्मा, उप महाप्रबन्धक (आई.टी.)

भ्रष्टाचार मुक्त भारत। विकास युक्त भारत। – तृतीय पुरस्कार
श्री सुनील कुमार, वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)

दिनांक 01.11.2022 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान ग्राम सभा पपनामऊ प्राथमिक विद्यालय में जागरूकता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों द्वारा भ्रष्टाचार पर स्लोगन लिखे। संयुक्त महाप्रबन्धक (वित्त) द्वारा छात्रों का सम्बोधित किया गया, तत्पश्चात पुरस्कार वितरित किया गया।

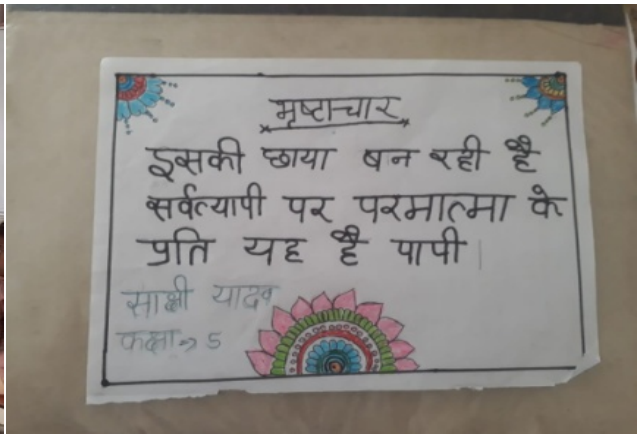

ग्राम सभा पपनामऊ प्राथमिक विद्यालय में सतर्कता जागरूकता के कुछ छाया चित्र

हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ की उपलब्धियां

क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार एवं अवध भारती हेतु उत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ को जुलाई–दिसम्बर, 2021 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट निष्पादन के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय–1), लखनऊ द्वारा प्रथम पुरस्कार एवं अवध भारती के लिए उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन हेतु उत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार नराकास (का.–1) के प्रत्यक्ष कर भवन में दिनांक 24.08.2022 को आयोजित 88वीं अर्ध–वार्षिक छमाही बैठक में श्री संदीप कुमार, प्रधान आयकर आयुक्त, लखनऊ के कर कमलों द्वारा दिया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का–1), लखनऊ की छमाही बैठक में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु दिनांक 24.08.2022 को प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के श्री रत्न प्रकाश, संयुक्त महाप्रबन्धक एवं श्री अयाज़ उद्दीन, हिन्दी नोडल अधिकारी साथ में कार्यालय के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।

कार्यालय को निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत

श्रीमान हरदीप सिंह पुरी माननीय मंत्री, आवासन एंव शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा लखनऊ क्षे. का. को सम्मानित किया गया। कार्यकारी निदेशक एवं संयुक्त महाप्रबन्धक (वित्त) ल.क्षे.का. द्वारा पुरस्कार ग्रहण किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के तत्वाधान में हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा प्राप्त पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), के तत्वाधान में हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा दिनांक 19 जनवरी, 2022 को आयोजित ''चित्र देखो कहानी लिखो प्रतियोगिता'' में हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ के अधिकारी श्री सुनील कुमार, वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त) ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया है।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा संबन्धित गतिविधियां

हिन्दी राजभाषा पखवाड़ा दिनांक 15.09.2022 से 30.09.2022

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ में दिनांक 15.09.2022 से 30.09.2022 के दौरान हिन्दी राजभाषा पखवाड़ा दिनांक 15.09.2022 को हर्ष और उल्लास के साथ प्रारम्भ किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रकार के आयोजन किये गये। जिसमें विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं हिन्दी निबन्ध लेखन, आशुभाषण, वाद–विवाद, हिन्दी शब्द ज्ञान आयोजित किया गया।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान दिनांक 14.09.2022 को हिन्दी दिवस एवं कार्यान्वयन समिति की बैठक की गयी तथा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। संयुक्त महाप्रबन्धक (वित्त) द्वारा दिनांक 15.09.2021 को पुरस्कार एवं हिन्दी को बढाने हेतु हिन्दी की किताबें सभी को वितरित कीं। इस दौरान संयुक्त महाप्रबन्धक (वित्त) ने सभी से हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने पर ज़ोर दिया।

राजभाषा पखवाड़े के दौरान हिन्दी कार्य बढ़ाने पर चर्चा करते हुए चित्र

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 06.09.2022 को हिन्दी राजभाषा कार्यशाला का आयोजन को किया गया, जिसमें श्री एन. एन. पाण्डेय, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय–1), कार्यालय प्रधान मुख्य आयकर (राजभाषा अनुभाग), प्रत्यक्ष कर भवन, 57 – रामतीर्थ मार्ग, लखनऊ – 226001 ने सम्बोधित किया।

हिन्दी राजभाषा पखवाड़ा दिनांक 15.09.2022 से 30.09.2022 एक रिपोर्ट

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ में दिनांक 15.09.2022 से 30.09.2020 के दौरान हिन्दी राजभाषा पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस 14.09.20222 को हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। हिन्दी पखवाड़ा का आरम्भ दिनांक 15.09.2022 को कार्यालय प्रमुख द्वारा किया गया। हडको एवं केन्द्र सरकार से समय–समय पर प्राप्त दिशा–निर्देश को ध्यान में रखकर मनाया गया। जिसमें विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं क्रमशः हिन्दी निबन्ध लेखन, आशुभाषण, वाद–विवाद, हिन्दी शब्द ज्ञान आयोजित की गयीं।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ में दिनांक 14.09.2022 को हिन्दी दिवस, दिनांक 31.08.2022 को कार्यान्वयन समिति की बैठक की गयी तथा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए दिनांक 06.09.2022 को कार्यशाला का आयोजन किया गया। संयुक्त महाप्रबन्धक द्वारा दिनांक 30.09.2022 को पुरस्कार वितरित किये गये। इस दौरान संयुक्त महाप्रबन्धक (वित्त) ने सभी से हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने पर ज़ोर दिया।

मुख्यालय द्वारा राजभाषा पखवाड़े का शुभारम्भ

दिनांक 15.09.2022 को निदेशक कारपोरेट–प्लानिंग द्वारा गुजरात के सूरत शहर से हिन्दी राजभाषा पखवाड़े का शुभारम्भ किया गया। उपरोक्त चित्र में लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी पखवाड़े के उदघाटन सत्र को टेलीविज़न पर सुनते हुए। विदित हो कि इसी दिन गुजरात के सूरत शहर से देश के गृह मंत्री श्रीमान अमित शाह ने देश के नाम अपना संदेश दिया। इस अवसर पर हडको नई दिल्ली से निदेश कारपोरेट प्लानिंग सहित हिन्दी विभाग के अधिकारीगण उपस्थित थे। निदेशक कारपोरेट–प्लानिंग द्वारा गुजरात के सूरत शहर से हिन्दी राजभाषा पखवाड़े का शुभारम्भ सूरत शहर से किया गया। जिसे टेलीविज़न पर हडको लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मयोगियों द्वारा सीधा प्रसारण देखा गया।

मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय की अवध भारती के 5वें अंक का विमोचन

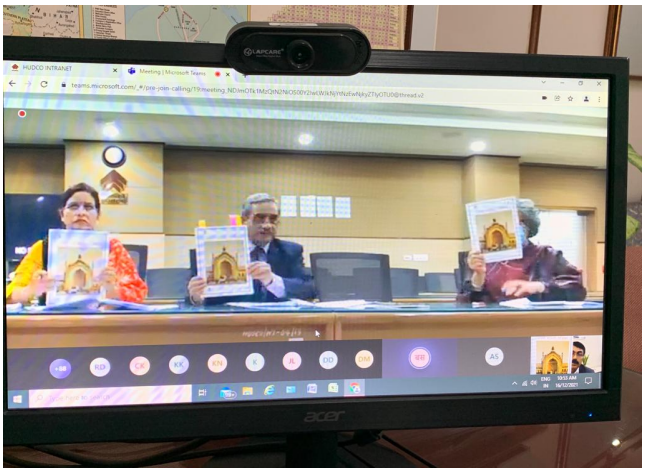

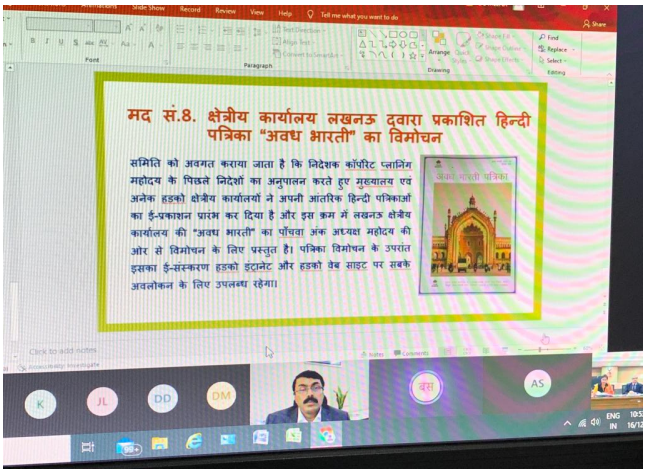

8वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2022

हडको मुख्यालय के अंतः कार्यालय ज्ञापन दिनांक 20.06.2022 के अनुसार हडको क्षेत्रीय कार्यालय में 8वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2022 का दिनांक 21.06.2022 को आयोजन किया गया। इस संम्बन्ध में हडको क्षेत्रीय कार्यालय में 8वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2022 का बैनर प्रवेश द्वार एवं सम्मेलन कक्ष में लगाया गया। हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ के संयुक्त महाप्रबन्धक (वित्त) ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को योग के बारे में जानकारी दी एवं कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में योग अभ्यास कराया। इस क्रम में कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने योग की महत्व पर चर्चा की एवं बीमारियों व शरीर को स्वस्थ्य रखने हेतु योग के महत्व के बारे में अवगत कराया गया तत्पश्चात अभ्यास भी कराया गया। जिसमें सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण अपने व्यस्त जीवन में योग को अपनाकर अपने शरीर को स्वस्थ्य रख सकें व बीमारियों से बच सकें।

इसके अतिरिक्त हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हडको मुख्यालय से मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशिक्षित आचार्य द्वारा एक घंटे के योग अभ्यास सत्र में भाग लिया, अभ्यास सत्र में आचार्य ने सर्वप्रथम योग की परिभाषा को बहुत ही सरल भाषा में समझाया। तत्पश्चात उन्होंने बताया कि सुबह से सांय तक हम सब को किस प्रकार योग अन्तर्गत अपनी जीवन शैली को व्यतीत करना चाहिए जिससे हम सब शरीर व मन से स्वस्थ रहें और बीमारियों से बच सकें। इसके अतिरिक्त आचार्य ने योग अभ्यास भी कराया जिसमें ताड़ आसन, वृक्ष आसन, उत्कट आसन, अर्धकटि आसन और अर्ध चक्र आसन प्रमुख थे। हडको के अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा योग से संबन्धित पूछे गये प्रश्नों का उत्तर भी दिया। हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ में 8वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के दौरान लिये गये फोटोग्राफ मुख्यालय भेज दिये गये थे।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय ने उपरोक्त रिपोर्ट को admnhudco@gmail.com पर मुख्यालय कार्यवाई हेतु भेजे गये है जिससे कि हडको की रिपोर्ट निर्धारित समय पर मंत्रालय एवं अन्य संबन्धित कार्यालयों में भेजी जा सके।

श्री सुनील कुमार वर्मा,
प्रबन्धक (आई.टी.)

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ में 52वां स्थापना दिवस

लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा 52वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया उसी क्षण के कुछ यादगार लम्हों के छाया चित्र कैमरें में कैद हो गये।

लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय की झांकियाँ

oppo reno

oppo reno

स्वच्छता विशेष अभियान-

अभियान-2.0

OPPO Reno5 Pro 5G · ©oppo reno 5
2021/11/30 17:24

साम्प्रदायिक सदभाव अभियान
डोनेशन बॉक्स

साम्प्रदायिक सदभाव अभियान
डोनेशन बॉक्स

हडको ऋण सपनों का घर

व्यक्तिगत आवासीय वित्त प्रदान करने के लिए हडको ने अपनी रिटेल वित्त 'हडको निवास' योजना व्यापक विकल्प तथा मूल्यवर्धक सेवाओं के साथ सबसे प्रतियोगी ब्याज दरों पर इस योजना के भाग के रूप में शुरू की। इस योजना में ऋण, घर/फ्लैट की खरीद, सरकारी कर्मचारियों की सहकारी समितियों, विख्यात बिल्डरों, पब्लिक एजेंसियों से प्लाट की खरीद, वर्तमान घर के विस्तार और सुधार, लीज होल्ड से परिवर्तन सहित विद्यमान घर के रजिस्ट्रेशन के लिए, अन्य संस्थानों से लिए गए विद्यमान ऋण के पुनर्वित्त पोषण हेतु ऋण प्रदान किया जाता है। केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, अर्द्ध–सरकारी संस्थानों तथा पीएसयू के कर्मचारियों को गृह निर्माण हेतु ऋण प्रदान किया जाता है ।

हडको निवास

- प्रतियोगी ब्याज दरें।
- ब्याज का आकलन मासिक घटते शेष पर किया जाता है।
- बकाया ऋण राशि को पूरा करने के लिए निःशुल्क व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा
- स्वीकृति के 0.25 प्रतिशत की दर से सुनने कार्रवाई एवं कम प्रशासनिक प्रभार
- कोई भी वापसी अदायगी पेनाल्टी नहीं
- स्थायी से परिवर्तनीय और इसके विपरीत विद्यमान ऋण के पुनर्निर्धारण की सुविधा
- ऋण की अवधि 25 वर्षों तक
- पारदर्शिता एवं कोई भी छिपी लागत नहीं
- वैकल्पिक बिल्डिंग टेक्नॉलाजी पर निःशुल्क परामर्श
- घर के डिजाइन हेतु निःशुल्क परामर्श

व्यक्तिगत आवासीय ऋण हेतु ब्याज दर

अलग–अलग उधारकर्ताओं को दिए गए अग्रिमों की विभिन्न श्रेणी के लिए अनुबंधित ऋणों की ब्याज दर सीमा	8.35 प्रतिशत से 9.05 प्रतिशत

हडको द्वारा वित्तीय पोषित पूर्वांचल एक्स्प्रेसवे परियोजना

हडको राष्ट्र सेवा में तत्पर

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कारपोरेशन